UP Board Class 12 General Hindi 2026 (Set 302 BN) Question Paper with Solutions

collegedunia

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). 'पतितों के देश में' रचना है:

(A) राहुल सांकृत्यायन की

(B) रामवृक्ष बेनीपुरी की

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी की

(D) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की

Correct Answer: (B) रामवृक्ष बेनीपुरी की

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
‘पतितों के देश में’ किस लेखक की रचना है, यह पहचानना है।

चरण 2: सही तथ्य:
‘पतितों के देश में’ रामवृक्ष बेनीपुरी की रचना है। यह उपन्यास उन्होंने जेल-जीवन के अनुभवों के आधार पर लिखा। बेनीपुरी जी शब्द-चित्र और रेखाचित्र लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी अन्य कृतियाँ ‘माटी की मूरतें’, ‘गेहूँ और गुलाब’, ‘अम्बपाली’ और ‘जंजीरें और दीवारें’ हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) राहुल सांकृत्यायन की रचनाएँ 'वोल्गा से गंगा', 'मेरी जीवन यात्रा' और 'घुमक्कड़ शास्त्र' हैं।
(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाएँ 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और 'अशोक के फूल' हैं।
(D) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की रचनाएँ 'माटी हो गई सोना' और 'जिन्दगी मुस्कराई' हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) रामवृक्ष बेनीपुरी की है।

1(b). संपूर्णानन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका है:

(A) 'धर्मयुग'

(B) 'हंस'

(C) 'सरस्वती'

(D) 'मर्यादा'

Correct Answer: (D) 'मर्यादा'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह जानना है कि डॉ. सम्पूर्णानन्द ने किस पत्रिका का सम्पादन किया।

चरण 2: सही तथ्य:
डॉ. सम्पूर्णानन्द (उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और विद्वान लेखक) ने काशी से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'मर्यादा' का सम्पादन किया। उनके सम्पादन-काल में यह पत्रिका राष्ट्रीय चेतना जगाने वाली प्रमुख पत्रिका थी।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:

(A) 'धर्मयुग' के सम्पादक धर्मवीर भारती थे।
(B) 'हंस' का सम्पादन प्रेमचन्द ने किया।
(C) 'सरस्वती' के सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रमुख रूप से जाने जाते हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) 'मर्यादा' है।

1(c). 'भाग्यवती' उपन्यास के लेखक हैं:

(A) मुंशी प्रेमचन्द
(B) अमृतलाल नागर
(C) श्रद्धाराम फुल्लौरी
(D) रामप्रसाद निरंजनी

Correct Answer: (C) श्रद्धाराम फुल्लौरी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'भाग्यवती' उपन्यास के लेखक का नाम चुनना है।

चरण 2: सही तथ्य:
'भाग्यवती' (सन् 1877) श्रद्धाराम फुल्लौरी का उपन्यास है। इसे हिन्दी के आरम्भिक सामाजिक उपन्यासों में गिना जाता है। इसमें स्त्री-शिक्षा और गृहस्थ जीवन के आदर्श बताए गए हैं। फुल्लौरी जी 'ओम जय जगदीश हरे' आरती के रचयिता भी माने जाते हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान', 'गबन' और 'सेवासदन' हैं।
(B) अमृतलाल नागर के उपन्यास 'बूँद और समुद्र' और 'मानस का हंस' हैं।
(D) रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योगवासिष्ठ' की रचना की, जो गद्य की प्रारम्भिक

कृति है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) श्रद्धाराम फुल्लौरी है।

1(d). हजारी प्रसाद द्विवेदी 'पद्मभूषण' उपाधि से सम्मानित हुए:

(A) 1963 में

(B) 1959 में

(C) 1957 में

(D) 1950 में

Correct Answer: (C) 1957 में

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह वर्ष चुनना है जिसमें हजारी प्रसाद द्विवेदी को 'पद्मभूषण' मिला।

चरण 2: सही तथ्य:
हजारी प्रसाद द्विवेदी को हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए सन् 1957 में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उन्हें 'आलोक पर्व' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (1973) भी मिला।

चरण 3: विकल्पों की जाँच:
(A) 1963, (B) 1959 और (D) 1950 में उन्हें यह उपाधि नहीं मिली। (D) 1950 वह वर्ष है जब वे हिन्दी भवन, शान्तिनिकेतन से जुड़े थे।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) 1957 में है।

1(e). निम्नलिखित साहित्यकारों में नाटककार हैं:

(A) रामचन्द्र शुक्ल

(B) डॉ. नगेन्द्र

(C) मोहन राकेश

(D) महादेवी वर्मा

Correct Answer: (C) मोहन राकेश

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
चार साहित्यकारों में से केवल नाटककार का चयन करना है।

चरण 2: सही तथ्य:
मोहन राकेश आधुनिक हिन्दी नाटक के प्रमुख नाटककार हैं। उनके नाटक 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे-अधूरे' बहुत प्रसिद्ध हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के श्रेष्ठ आलोचक और निबन्धकार हैं।
(B) डॉ. नगेन्द्र प्रसिद्ध आलोचक हैं।
(D) महादेवी वर्मा छायावाद की कवयित्री और रेखाचित्रकार हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) मोहन राकेश है।

2(a). मैथिलीशरण द्वारा रचित कृति है:

(A) 'रसकलश'

(B) 'दानलीला'

(C) 'प्रदक्षिणा'

(D) 'अतिमा'

Correct Answer: (C) 'प्रदक्षिणा'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
चार कृतियों में से मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कृति चुननी है।

चरण 2: सही तथ्य:
'प्रदक्षिणा' मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-रचना है। उनकी अन्य कृतियाँ 'साकेत', 'यशोधरा', 'पंचवटी', 'भारत-भारती' और 'जयद्रथ वध' हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) 'रसकलश' अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना है।
(B) 'दानलीला' गुप्त जी की रचनाओं की सूची में नहीं है।
(D) 'अतिमा' नाम की कोई कृति गुप्त जी की नहीं है; 'अणिमा' निराला की है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) 'प्रदक्षिणा' है।

2(b). 'रामधारी सिंह दिनकर' की रचना है:

(A) 'पृथिवीपुत्र'

(B) 'स्वर्ण किरण'

(C) 'परशुराम की प्रतीक्षा'

(D) 'ऐसा कोई घर आपने देखा है'

Correct Answer: (C) 'परशुराम की प्रतीक्षा'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में पूछा गया है कि दिए गए विकल्पों में से कौन-सी रचना रामधारी सिंह 'दिनकर' की है। दिनकर राष्ट्रीय चेतना और ओज के प्रसिद्ध कवि हैं।

चरण 2: सही विकल्प की पहचान:
'परशुराम की प्रतीक्षा' दिनकर का काव्य-संग्रह है। इसमें 1962 के चीनी आक्रमण के बाद देश को जगाने वाली ओजपूर्ण कविताएँ हैं। इसलिए (C) सही है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) 'पृथिवीपुत्र' वासुदेवशरण अग्रवाल की रचना है, दिनकर की नहीं।
(B) 'स्वर्ण किरण' सुमित्रानन्दन पन्त का काव्य-संग्रह है।
(D) 'ऐसा कोई घर आपने देखा है' दिनकर की रचना नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) 'परशुराम की प्रतीक्षा' है।

2(c). 'छायावाद' की विशेषता है:

(A) इतिवृत्तात्मकता
(B) सौन्दर्य एवं प्रेम
(C) श्रृंगारिक भावना
(D) उपदेशात्मक वृत्ति

Correct Answer: (B) सौन्दर्य एवं प्रेम

Solution:

चरण 1: छायावाद का परिचय:
छायावाद हिन्दी कविता की वह धारा है जो लगभग 1918 से 1936 तक चली। इसके प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा हैं।

चरण 2: सही विकल्प:
छायावादी कविता में प्रकृति के सौन्दर्य, मानव-सौन्दर्य और प्रेम का सूक्ष्म तथा भावुक चित्रण मिलता है। इसलिए (B) सौन्दर्य एवं प्रेम सही है।

चरण 3: गलत विकल्पों का कारण:
(A) इतिवृत्तात्मकता द्विवेदी युग की विशेषता है, जिसमें घटनाओं का सीधा वर्णन होता था।
(C) श्रृंगारिक भावना रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्ति है।
(D) उपदेशात्मक वृत्ति भी द्विवेदी युग की कविता में अधिक मिलती है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) सौन्दर्य एवं प्रेम है।

2(d). 'छायावाद' युग में लिखी गई रचना है:

(A) 'प्रेम माधुरी'

(B) 'उद्धवशतक'

(C) 'चित्राधार'

(D) 'सूरसारावली'

Correct Answer: (C) 'चित्राधार'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ ऐसी रचना चुननी है जो छायावाद युग में लिखी गई हो। छायावाद का समय

लगभग 1918 से 1936 माना जाता है।

चरण 2: सही विकल्प:
(C) 'चित्राधार' जयशंकर प्रसाद का काव्य-संग्रह है, जो 1918 में प्रकाशित हुआ। प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक कवियों में गिने जाते हैं, इसलिए यही उत्तर है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) 'प्रेम माधुरी' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना है, जो भारतेन्दु युग की है।
(B) 'उद्धवशतक' जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की रचना है, जो ब्रजभाषा का काव्य है और द्विवेदी युग के आसपास का है।
(D) 'सूरसारावली' भक्तिकाल के कवि सूरदास की रचना है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) 'चित्राधार' है।

2(e). महाकवि भूषण की रचना है:

(A) 'चिदम्बरा'

(B) 'यामा'

(C) 'छत्रसाल दशक'

(D) 'दीपशिखा'

Correct Answer: (C) 'छत्रसाल दशक'

Solution:

चरण 1: कवि का परिचय:
भूषण रीतिकाल के वीर रस के प्रसिद्ध कवि हैं। उन्होंने शिवाजी और छत्रसाल जैसे वीर राजाओं की प्रशंसा में कविता लिखी।

चरण 2: सही विकल्प:

'छत्रसाल दशक' भूषण की रचना है, जिसमें बुन्देला राजा छत्रसाल की वीरता का वर्णन है। इसलिए (C) सही है। उनकी अन्य रचनाएँ 'शिवराजभूषण' और 'शिवाबावनी' हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) 'चिदम्बरा' सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है।
(B) 'यामा' महादेवी वर्मा की रचना है।
(D) 'दीपशिखा' भी महादेवी वर्मा की रचना है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) 'छत्रसाल दशक' है।

3(i). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अधक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ है, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सामान्य हिन्दी' के गद्य खण्ड में संकलित निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है। इसके लेखक प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

चरण 2: अंश का परिचय:
इस अंश में लेखक ने राष्ट्र के भौतिक स्वरूप को निखारने की बात कही है। वे चाहते हैं कि धरती, आकाश और सागर की सम्पदा के प्रति नयी चेतना जागे।
विज्ञान और परिश्रम के मेल से राष्ट्र को आगे बढ़ाने का सन्देश भी इसी अंश में दिया गया है।

निष्कर्ष:
पाठ: राष्ट्र का स्वरूप, लेखक: वासुदेवशरण अग्रवाल।

3(ii). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अधक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ है, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह अंश वासुदेवशरण अग्रवाल के निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
उद्यम: परिश्रम, प्रयत्न। भौतिक स्वरूप: राष्ट्र का बाहरी, साधनों और सुविधाओं वाला रूप। ठाट: व्यवस्था, ढाँचा। नित्य: प्रतिदिन।

चरण 3: व्याख्या:

लेखक कहते हैं कि राष्ट्र को समृद्ध बनाने के लिए केवल ज्ञान या केवल श्रम पर्याप्त नहीं है। विज्ञान नयी राह दिखाता है और उद्यम उस राह पर चलने की शक्ति देता है। दोनों के मेल से ही राष्ट्र का भौतिक ढाँचा नये सिरे से खड़ा हो सकता है।
यह काम बोझ समझकर नहीं, बल्कि प्रसन्नता और उत्साह से करना चाहिए। साथ ही परिश्रम में कमी नहीं आनी चाहिए और प्रगति का यह क्रम हर दिन चलता रहना चाहिए।

चरण 4: विशेष:
भाषा सरल, तत्सम शब्दों से युक्त और प्रेरणादायक है। शैली विचारात्मक है।

निष्कर्ष:
राष्ट्र की भौतिक उन्नति विज्ञान, परिश्रम, उत्साह और निरन्तर प्रयत्न से ही सम्भव है।

3(iii). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अधक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ है, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(iii) राष्ट्रीय चेतना में भौतिक ज्ञान - विज्ञान के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि राष्ट्र की चेतना जगाने में भौतिक ज्ञान और विज्ञान का क्या स्थान है। उत्तर गद्यांश के आधार पर देना है।

चरण 2: उत्तर:

लेखक के अनुसार धरती, आकाश और सागर में जो सामग्री और रत्न भरे हैं, उनके प्रति राष्ट्र में जिज्ञासा और स्वागत का भाव जगना चाहिए। यह जिज्ञासा विज्ञान से ही पूरी होती है।
विज्ञान से हम प्राकृतिक साधनों को जानते और उपयोग में लाते हैं। जब विज्ञान और उद्यम मिलते हैं, तब राष्ट्र का भौतिक स्वरूप नये ठाट से खड़ा होता है। इसलिए राष्ट्रीय चेतना में इनका बहुत बड़ा महत्त्व है।

निष्कर्ष:
भौतिक ज्ञान-विज्ञान राष्ट्र को जागरूक, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने का आधार है।

3(iv). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अधक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ है, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(iv) लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था कब तक स्वीकार की है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से उत्तर:
लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था तब तक स्वीकार की है, जब तक राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में पृथ्वी, आकाश और सागर की सम्पदा के प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें नहीं फूटतीं।

चरण 2: आशय:
जब तक युवा इस प्राकृतिक सम्पदा को जानने और अपनाने की उत्सुकता नहीं दिखाते, तब तक राष्ट्र सोए हुए के समान है।

अंतिम उत्तर:
नवयुवकों में जिज्ञासा जागने तक राष्ट्र सोया हुआ माना गया है।

3(v). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अधक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ है, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(v) विज्ञान और श्रम के संयोग से राष्ट्र प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हो सकता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का भाव:
लेखक के अनुसार विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खड़ा करना है।

चरण 2: प्रगति कैसे होगी:
विज्ञान राष्ट्र को प्रकृति की सम्पदा का ज्ञान देता है और श्रम उस ज्ञान को व्यवहार में बदलता है। जब दोनों साथ चलते हैं, तब राष्ट्र में साधन बढ़ते हैं और नयी व्यवस्था बनती है।
यह काम प्रसन्नता, उत्साह और अधिक परिश्रम से रोज आगे बढ़ना चाहिए। साथ ही राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति इस कार्य में भाग ले, कोई भी हाथ खाली न रहे।

निष्कर्ष:

विज्ञान के ज्ञान और सबके सम्मिलित श्रम से राष्ट्र निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ सकता है।

OR

3(i). *गद्यांश:* ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है, लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निंदा करने में आता है। इस प्रकार का निंदक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है, और निंदा का जल छिड़क कर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निंदक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चांद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है, वह निंदक बेचारा स्वयं दंडित होता है। आप चैन से सोइये और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक और पाठ का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: लेखक और पाठ:
प्रस्तुत गद्यांश 'निन्दा रस' नामक व्यंग्य-निबन्ध से लिया गया है।
इसके लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई हैं।

चरण 2: पाठ का संकलन:
यह पाठ उत्तर प्रदेश बोर्ड की कक्षा 12 की पाठ्य-पुस्तक 'गद्य गरिमा' में संकलित है।
इसमें परसाई जी ने निन्दा करने वाले लोगों की मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया है।

अंतिम उत्तर:
लेखक: हरिशंकर परसाई; पाठ: निन्दा रस।

3(ii). *गद्यांश:* ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है, लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निंदा करने में आता है। इस प्रकार का निंदक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है, और निंदा का जल छिड़क कर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निंदक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चांद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है, वह निंदक बेचारा स्वयं दंडित होता है। आप चैन से सोइये और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित व्यंग्य निबन्ध 'निन्दा रस' से उद्धृत है। इसमें लेखक ने ईर्ष्या-द्वेष से की जाने वाली निन्दा और उसके निन्दक की दशा का वर्णन किया है।

चरण 2: प्रसंग:
लेखक ने पहले बताया कि ईर्ष्या-द्वेष से निन्दा करने वाला स्वयं जलता रहता है और उसे अलग से कोई दण्ड देने की आवश्यकता नहीं। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए वे यहाँ बताते हैं कि किसी की सफलता निन्दक का कष्ट और बढ़ा देती है।

चरण 3: शब्दार्थ:
निरन्तर: लगातार, बिना रुके।
दंड: सज़ा, पीड़ा।
सख्त: कठोर, अधिक कष्टदायक।
ईर्ष्याग्रस्त: जलन से भरा हुआ।

चरण 4: व्याख्या:
लेखक का कहना है कि जो व्यक्ति लगातार अच्छे काम करता रहता है, उसकी निन्दा करने वाला ईर्ष्यालु व्यक्ति और अधिक दुखी होता जाता है। उसकी जलन का कारण सामने वाले की योग्यता है। जितनी अधिक उपलब्धियाँ होंगी, उतनी ही अधिक पीड़ा निन्दक को होगी। इस प्रकार अच्छा काम करने वाले को कुछ करना नहीं पड़ता, उसकी सफलता ही निन्दक को दण्ड देती रहती है। आगे लेखक कवि का उदाहरण देते हैं कि एक अच्छी कविता से निन्दक को कष्ट होता है और दूसरी अच्छी कविता लिखने पर कष्ट दुगुना हो जाता है।

निष्कर्ष:
इस अंश में व्यंग्य यह है कि निन्दक अपनी ईर्ष्या के कारण स्वयं ही अपना शत्रु है। साथ ही यह सन्देश भी है कि निन्दा से घबराए बिना अच्छे काम करते रहना ही उसका सबसे अच्छा उत्तर है।

3(iii). *गद्यांश:* ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है, लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निंदा करने में आता है। इस प्रकार का निंदक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है, और निंदा का जल छिड़क कर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निंदक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चांद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है, वह निंदक बेचारा स्वयं दंडित होता है। आप चैन से सोइये और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

(iii) निंदा कितने प्रकार की होती है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश के आधार पर उत्तर:
गद्यांश के अनुसार निन्दा मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है।

चरण 2: दोनों प्रकार:
पहली, मिशनरी भाव से की जाने वाली निन्दा, जिसमें निन्दक को बड़ा आनन्द मिलता है।
दूसरी, ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा, जिसमें वह मजा नहीं आता और निन्दक स्वयं दुखी रहता है।

अंतिम उत्तर:
निन्दा दो प्रकार की होती है: मिशनरी भाव वाली और ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित।

3(iv). *गद्यांश:* ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है, लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निंदा करने में आता है। इस प्रकार का निंदक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है, और निंदा का जल छिड़क कर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निंदक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चांद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है, वह निंदक बेचारा स्वयं दंडित होता है। आप चैन से सोइये और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

(iv) मिशनरी भाव से निंदा करने से क्या मिलता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश के आधार पर उत्तर:
लेखक के अनुसार मिशनरी भाव से निन्दा करने में निन्दक को विशेष मजा, अर्थात् आनन्द मिलता है।

चरण 2: तुलना:
ईर्ष्या-द्वेष से की गई निन्दा में यह आनन्द नहीं आता, क्योंकि वहाँ निन्दक जलन से

दुखी रहता है। मिशनरी भाव वाला निन्दक इसे अपना कर्तव्य मानकर प्रसन्न रहता है।

अंतिम उत्तर:
मिशनरी भाव से निन्दा करने से निन्दक को आनन्द और सन्तोष मिलता है।

3(v). *गद्यांश:* ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है, लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निंदा करने में आता है। इस प्रकार का निंदक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है, और निंदा का जल छिड़क कर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निंदक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चांद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है, वह निंदक बेचारा स्वयं दंडित होता है। आप चैन से सोइये और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

(v) ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित निंदक किस कारण सो नहीं पाता?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश के आधार पर उत्तर:
ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दक जलन के कारण सो नहीं पाता।

चरण 2: कारण की व्याख्या:
वह अपनी अक्षमता से पीड़ित रहता है और दूसरे की योग्यता देखकर चौबीसों घंटे जलता रहता है। इसी जलन की पीड़ा उसे चैन से सोने नहीं देती। दूसरा व्यक्ति चैन से सोता है, पर निन्दक रात भर बेचैन रहता है।

अंतिम उत्तर:
निन्दक ईर्ष्या-द्वेष की जलन के कारण सो नहीं पाता।

4(i). *पद्यांश:* ज्यों ज्यों लगती नाव पार
उर में आलोकित शत विचार!
इस धरा सा ही जग का क्रम
शाश्वत इस जीवन का उद्गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जगजीवन के कर्णधार!
चिर जन्म मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन नौका विहार।
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान!

(i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं पद्यांश का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पद्यांश की पहचान:
ये पंक्तियाँ 'नौका-विहार' कविता का अंतिम अंश हैं। इसमें कवि गंगा की धारा में नाव-यात्रा का अनुभव कहते हैं।

चरण 2: कवि का नाम:
इस पद्यांश के कवि छायावाद के प्रमुख कवि सुमित्रानन्दन पन्त हैं। प्रकृति का सुकुमार चित्रण उनकी पहचान है।

अंतिम उत्तर:
कवि: सुमित्रानन्दन पन्त। पद्यांश का नाम (कविता): नौका-विहार।

4(ii). *पद्यांश:* ज्यों ज्यों लगती नाव पार
उर में आलोकित शत विचार!
इस धरा सा ही जग का क्रम
शाश्वत इस जीवन का उद्गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जगजीवन के कर्णधार!
चिर जन्म मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन नौका विहार।
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान!

(ii) जग का क्रम किस प्रकार का है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संबंधित पंक्ति:
कवि कहते हैं: 'इस धरा सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम'।

चरण 2: उत्तर:
कवि के अनुसार जग का क्रम इस धरती के समान शाश्वत है, अर्थात सदा चलने वाला और कभी न मिटने वाला है। सृष्टि का यह चक्र निरंतर चलता रहता है। जीवन की उत्पत्ति का मूल भी इसी प्रकार सनातन है।

अंतिम उत्तर:
जग का क्रम शाश्वत (नित्य और अविनाशी) है।

4(iii). *पद्यांश:* ज्यों ज्यों लगती नाव पार
उर में आलोकित शत विचार!
इस धरा सा ही जग का क्रम
शाश्वत इस जीवन का उद्गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जगजीवन के कर्णधार!
चिर जन्म मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन नौका विहार।
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान!

(iii) किन-किन तथ्यों को शाश्वत बताया गया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पद्यांश में 'शाश्वत' शब्द:
कवि ने कई पंक्तियों में 'शाश्वत' शब्द दोहराया है। इसका अर्थ है सदा रहने वाला, अनश्वर।

चरण 2: शाश्वत बताए गए तथ्य:
1. जग का क्रम
2. जीवन का उद्गम (उत्पत्ति)
3. गति और संगम
4. आकाश का नीला विस्तार
5. चन्द्रमा की चाँदनी की उजली हँसी
6. छोटी-छोटी लहरों का विलास
7. जीवन रूपी नौका-विहार

अंतिम उत्तर:
जग का क्रम, जीवन का उद्गम, गति, संगम, नभ का विकास, चन्द्रमा की हँसी, लहरों का विलास और जीवन का नौका-विहार शाश्वत बताए गए हैं।

4(iv). *पद्यांश:* ज्यों ज्यों लगती नाव पार
उर में आलोकित शत विचार!
इस धरा सा ही जग का क्रम
शाश्वत इस जीवन का उद्गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जगजीवन के कर्णधार!
चिर जन्म मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन नौका विहार।
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान!

(iv) रजत हास और कर्णधार का क्या अर्थ है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रजत हास का अर्थ:
'रजत' का अर्थ चाँदी है और 'हास' का अर्थ हँसी। रजत हास का अर्थ है चाँदी जैसी उजली हँसी। यहाँ यह चन्द्रमा की श्वेत चाँदनी के लिए आया है।

चरण 2: कर्णधार का अर्थ:
'कर्णधार' नाव का खेवैया या मल्लाह होता है, जो नाव को दिशा देता है। कविता में यह ईश्वर के लिए है, जो जगत और जीवन की नौका का संचालक है।

अंतिम उत्तर:
रजत हास: चाँदी-सी उजली हँसी (चाँदनी)। कर्णधार: नाव का खेवैया, यहाँ जीवन का संचालक ईश्वर।

4(v). *पद्यांश:* ज्यों ज्यों लगती नाव पार
उर में आलोकित शत विचार!
इस धरा सा ही जग का क्रम
शाश्वत इस जीवन का उद्गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास,
शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास
हे जगजीवन के कर्णधार!
चिर जन्म मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन नौका विहार।
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान!

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संदर्भ:
यह पद्यांश 'नौका-विहार' कविता से लिया गया है। इसके कवि छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पन्त हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:
धरा: पृथ्वी। क्रम: चक्र, सिलसिला। शाश्वत: सदा रहने वाला। उद्गम: उत्पत्ति, आरंभ।

चरण 3: भावार्थ:
नाव जैसे-जैसे किनारे लगती है, कवि के हृदय में सैकड़ों विचार उजाला करते हैं। वह अनुभव करता है कि यह संसार धरती की तरह सदा बना रहने वाला है। सृष्टि का चक्र कभी नहीं रुकता। जीवन की उत्पत्ति भी सनातन है, अर्थात जीवन एक अनादि प्रवाह है।

चरण 4: विशेष:
यहाँ कवि ने संसार की नश्वरता से आगे बढ़कर जीवन की निरंतरता को देखा है। उपमा अलंकार है और भाषा सरल, तत्सम प्रधान खड़ीबोली है।

निष्कर्ष:
कवि के अनुसार जग का क्रम और जीवन का स्रोत धरती के समान शाश्वत हैं।

OR

4(i). *पद्यांश:* अलसता की सी लता
किंतु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर पथ से चली
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन झुन रुन झुन रुन झुन नहीं
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप-चुप-चुप'
है गूँज रहा सब कहीं।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं पद्यांश का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कवि का नाम:
इस पद्यांश के कवि छायावाद के प्रमुख स्तम्भ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

चरण 2: पद्यांश का नाम:
यह पद्यांश 'संध्या-सुन्दरी' शीर्षक कविता से लिया गया है। यह कविता निराला जी के काव्य-संग्रह 'परिमल' में संकलित है। इसमें कवि ने सायंकाल को एक कोमल सुन्दरी के रूप में चित्रित किया है।

अंतिम उत्तर:
कवि: सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; पद्यांश की कविता: 'संध्या-सुन्दरी'।

4(ii). *पद्यांश:* अलसता की सी लता
किंतु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर पथ से चली
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन झुन रुन झुन रुन झुन नहीं
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप-चुप-चुप'
है गूँज रहा सब कहीं।

(ii) कवि ने संध्या को किस रूप में चित्रित किया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आधार:
कवि ने इस पद्यांश में संध्या का मानवीकरण किया है। वह उसे जीती-जागती नारी की तरह दिखाता है।

चरण 2: संध्या का रूप:
कवि ने संध्या को एक सुकुमार, सलज्ज और शान्त सुन्दरी के रूप में चित्रित किया है। वह आलस्य से भरी लता और कोमल कली जैसी लगती है।
वह मौन को अपनी सखी बनाकर उसके कंधे पर बाँह डाले आकाश-मार्ग से धीरे-धीरे

उतर रही है।

चरण 3: विशेषता:
उसके हाथ में वीणा नहीं है और पैरों में नूपुर की झंकार भी नहीं है। चारों ओर केवल चुप-चुप का अव्यक्त स्वर गूँज रहा है।

अंतिम उत्तर:
कवि ने संध्या को मौन-प्रिय, कोमल और आलसी-सी सुन्दरी के रूप में चित्रित किया है।

4(iii). *पद्यांश:* अलसता की सी लता
किंतु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर पथ से चली
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन झुन रुन झुन रुन झुन नहीं
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप-चुप-चुप'
है गूँज रहा सब कहीं।

(iii) अलसता की लता किसको कहा गया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संकेत की पहचान:
पद्यांश की पहली पंक्ति है ‘अलसता की सी लता’। यहाँ कवि उपमा देकर किसी की आलस भरी सुकुमारता बता रहा है।

चरण 2: उत्तर:
‘अलसता की लता’ संध्या-सुन्दरी को कहा गया है। सायंकाल में दिन की चहल-पहल थम जाती है और वातावरण शिथिल हो जाता है। इसी शिथिलता के कारण कवि ने

संध्या को आलस से भरी लता जैसा बताया है।

अंतिम उत्तर:
अलसता की लता संध्या-सुन्दरी को कहा गया है।

4(iv). *पद्यांश:* अलसता की सी लता
किंतु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर पथ से चली
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन झुन रुन झुन रुन झुन नहीं
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप-चुप-चुप'
है गूँज रहा सब कहीं।

(iv) अव्यक्त शब्द का अर्थ और विलोम शब्द लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अर्थ:
'अव्यक्त' का अर्थ है: जो स्पष्ट रूप से प्रकट न हो, जो साफ़-साफ़ कहा या सुना न जा सके। यहाँ 'अव्यक्त शब्द' का आशय है ऐसी ध्वनि जो साफ़ सुनाई नहीं देती, केवल अनुभव होती है, जैसे चुप-चुप का मौन स्वर।

चरण 2: विलोम शब्द:
'अव्यक्त' का विलोम शब्द 'व्यक्त' है, जिसका अर्थ है प्रकट, स्पष्ट।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: अप्रकट या अस्पष्ट; विलोम: व्यक्त।

4(v). *पद्यांश:* अलसता की सी लता
किंतु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर पथ से चली
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन झुन रुन झुन रुन झुन नहीं
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप-चुप-चुप'
है गूँज रहा सब कहीं।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'संध्या-सुन्दरी' से ली गई हैं। यह कविता 'परिमल' संग्रह में संकलित है।

चरण 2: शब्दार्थ:
नीरवता: मौन, शान्ति। छाँह: छाया। अम्बर-पथ: आकाश का मार्ग।

चरण 3: व्याख्या:
कवि कहता है कि संध्या रूपी सुन्दरी अपनी सखी नीरवता के कंधे पर बाँह रखकर चल रही है। वह आकाश-मार्ग से किसी परछाईं की तरह चुपचाप उतर रही है। जैसे छाया की कोई आहट नहीं होती, वैसे ही संध्या के आने की भी कोई आहट नहीं होती। सूर्यास्त के साथ ही सारा वातावरण शान्त हो जाता है।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य:
यहाँ मानवीकरण और उपमा अलंकार है। भाषा तत्सम-प्रधान, खड़ीबोली और छायावादी शैली की है।

निष्कर्ष:
कवि ने संध्या को शान्ति की सखी मानकर उसके निःशब्द आगमन का सुन्दर चित्र खींचा है।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **वासुदेव शरण अग्रवाल**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
पुरातत्त्ववेत्ता और निबन्धकार डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का साहित्यिक परिचय और प्रमुख रचनाएँ अधिकतम 80 शब्दों में लिखनी हैं।

चरण 2: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म 1904 ई. में उत्तर प्रदेश में हुआ। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की और पुरातत्त्व, इतिहास तथा संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान बने। वे भारतीय संस्कृति के व्याख्याता और श्रेष्ठ निबन्धकार हैं। उनकी भाषा शुद्ध, तत्सम-प्रधान खड़ी बोली है और शैली विचारात्मक तथा गम्भीर है।

चरण 3: प्रमुख रचनाएँ:
निबन्ध-संग्रह: पृथिवी पुत्र, कला और संस्कृति, कल्पवृक्ष, भारत की मौलिक एकता, राष्ट्र का स्वरूप।
शोध और आलोचना: पाणिनिकालीन भारत, हर्षचरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन, पद्मावत की संजीवनी व्याख्या।

चरण 4: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. वे मथुरा तथा लखनऊ के संग्रहालयों से जुड़े रहे और दिल्ली में भी पुरातत्त्व से जुड़े पदों पर कार्य किया।
2. वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कला और वास्तु विभाग के आचार्य रहे।

3. उनका निधन 1967 ई. में हुआ।

निष्कर्ष:
अग्रवाल जी ने भारतीय संस्कृति को साहित्य की भाषा में प्रस्तुत किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को बलिया (उत्तर प्रदेश) के आरत दुबे का छपरा गाँव में हुआ। वे शान्तिनिकेतन और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के आचार्य रहे। उन्होंने निबन्ध, उपन्यास, आलोचना और इतिहास में लिखा। भाषा तत्सम-प्रधान, भावपूर्ण और शैली विचारात्मक है। पद्म भूषण से सम्मानित हुए; 1979 में निधन।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:
अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):
1. अन्य निबन्ध-संग्रह: कल्पलता, आलोक पर्व, विचार और वितर्क।
2. अन्य उपन्यास: चारुचन्द्रलेख, अनामदास का पोथा।
3. इतिहास और आलोचना: हिन्दी साहित्य का आदिकाल, नाथ सम्प्रदाय, सूर साहित्य।
4. उनके ललित निबन्धों में भारतीय संस्कृति और लोक-जीवन का सुन्दर मेल है।

निष्कर्ष:

द्विवेदी जी हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार, उपन्यासकार और आलोचक थे। उन्होंने साहित्य को भारतीय संस्कृति से जोड़कर देखा।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):
प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी का जन्म 1919 ई. में आन्ध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले में हुआ। वे श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। वे हिन्दी और तेलुगु के तुलनात्मक अध्ययन के प्रमुख विद्वान थे। उनकी भाषा शुद्ध, तत्सम शब्दों से युक्त और शैली विचारात्मक है।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:
वैचारिकी, शोध और बोध, मेरे विचार, साहित्य और समाज, हिन्दी और तेलुगु: एक तुलनात्मक अध्ययन, दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):
1. उन्होंने दक्षिण और उत्तर भारत के साहित्य को जोड़ने का काम किया।
2. उनके निबन्धों में विषय की गहरी विवेचना और तर्कपूर्ण विश्लेषण मिलता है।
3. वे भाषा-विज्ञान और तुलनात्मक साहित्य के भी गहरे अध्येता थे।

निष्कर्ष:
सुन्दर रेड्डी जी हिन्दी के समालोचक और चिन्तक थे। उन्होंने हिन्दी को दक्षिण भारत में लोकप्रिय बनाने में बड़ा योगदान दिया।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म 15 अप्रैल 1865 को निजामाबाद (आजमगढ़, उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने खड़ीबोली में पहला महाकाव्य लिखा। उनके काव्य में लोकमंगल, राष्ट्रप्रेम और मानवीय संवेदना है। प्रमुख रचनाएँ: प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, रसकलश, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे; उपन्यास: ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'प्रियप्रवास' (1914) में राधा-कृष्ण की कथा नए रूप में है, जिसमें राधा लोकसेविका के रूप में दिखती हैं।
2. उन्हें 'कवि सम्राट' कहा गया और वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रहे।
3. उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों में काव्य-रचना की।
4. उनका निधन 16 मार्च 1947 को हुआ।

निष्कर्ष:
हरिऔध जी ने खड़ीबोली को काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में बड़ा योगदान दिया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **मैथिलीशरण गुप्त**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय देकर उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करना है। परिचय को लगभग 80 शब्दों में रखना उचित है।

चरण 2: साहित्यिक परिचय:
मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई. में चिरगाँव (झाँसी, उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से द्विवेदी युग के प्रमुख कवि बने। उन्होंने खड़ी बोली को काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनकी कविता में राष्ट्रप्रेम, अतीत का गौरव, नारी के प्रति सम्मान और भारतीय संस्कृति की भावना है। भाषा सरल, शुद्ध खड़ी बोली है। इसी कारण उन्हें 'राष्ट्रकवि' कहा गया।

चरण 3: प्रमुख रचनाएँ:
महाकाव्य: साकेत।
खण्डकाव्य: पंचवटी, जयद्रथ-वध, यशोधरा, द्वापर, नहुष, सिद्धराज।
अन्य: भारत-भारती, झंकार, किसान, अनघ, जय भारत।

चरण 4: अतिरिक्त बिन्दु:
1. 'साकेत' में उर्मिला के त्याग और विरह को विशेष स्थान मिला है।
2. 'भारत-भारती' ने स्वतन्त्रता-आन्दोलन के समय राष्ट्रीय चेतना जगाई।
3. वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे और पद्म भूषण से सम्मानित हुए। उनका निधन 1964 ई. में हुआ।

निष्कर्ष:
गुप्त जी खड़ी बोली के प्रथम प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कवि हैं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए: **जयशंकर प्रसाद**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में):
जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी में हुआ। वे छायावाद के प्रवर्तक और स्तम्भ माने जाते हैं। वे कवि, नाटककार, कहानीकार और उपन्यासकार थे। उनके काव्य में प्रकृति-प्रेम, सौन्दर्य, राष्ट्रीय चेतना और दार्शनिकता है। भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। प्रमुख रचनाएँ: कामायनी, आँसू, लहर, झरना; नाटक: स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी; उपन्यास: कंकाल, तितली।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'कामायनी' (1936) आधुनिक हिन्दी का श्रेष्ठ महाकाव्य है, इस पर उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला।
2. कहानी-संग्रह: छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल।
3. अन्य नाटक: अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री।
4. उनका निधन 15 नवम्बर 1937 को वाराणसी में हुआ।

निष्कर्ष:
प्रसाद जी की प्रतिभा ने हिन्दी की हर प्रमुख विधा को नई ऊँचाई दी।

6. 'बहादुर' कहानी का सारांश अपनी भाषा में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:
'बहादुर' अमरकान्त की चर्चित कहानी है। इसके पात्र हैं: नौकर बहादुर, गृहस्वामी (कथावाचक), उनकी पत्नी निर्मला और बड़ा बेटा किशोर।

चरण 2: सारांश (80 शब्दों में):
नेपाली लड़का बहादुर घर से भागकर एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार में नौकर बनता

है। वह मेहनती है और घर में रौनक ला देता है। बाद में किशोर उसे पीटने लगता है और निर्मला भी कठोर हो जाती है। उस पर चोरी का आरोप लगता है, तो गृहस्वामी उसे थप्पड़ मार देते हैं। अपमानित बहादुर चला जाता है और सब पछताते हैं।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. बहादुर की उम्र बारह-तेरह साल थी। उसके पिता युद्ध में मारे गए थे और माँ उसे मारती थी।
2. उसकी सादगी और मेहनत से शुरू में पूरा परिवार उससे प्रसन्न रहता है।
3. उसके जाने के बाद ही घरवालों को उसकी उपयोगिता समझ आई और सबको पछतावा हुआ।

निष्कर्ष:
कहानी नौकर के प्रति संवेदना और मानवीय व्यवहार की माँग करती है।

OR

'पंचलाइट' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:
'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध आंचलिक कहानी है। इसकी कथा बिहार के एक गाँव की है, जहाँ बिरादरी की पंचायत पेट्रोमैक्स (पंचलाइट) खरीदती है।

चरण 2: कथा का संकेत:
पंचलाइट जल नहीं पाती, क्योंकि पूरे टोले में किसी को उसे जलाना नहीं आता। गोधन को बिरादरी ने प्रेम और सिनेमा के गीत गाने के कारण अलग कर रखा है। मुनरी के संकेत पर पता चलता है कि गोधन यह काम जानता है। उसे बुलाया जाता है, वह पंचलाइट जला देता है और उसे माफ कर दिया जाता है।

चरण 3: उद्देश्य:

1. गाँव की जातिगत पंचायतों की कठोरता और अन्धविश्वास पर व्यंग्य करना।
2. यह दिखाना कि आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति की योग्यता सामाजिक नियमों से बड़ी हो जाती है।
3. ग्रामीण जीवन की सरलता, हास्य और आंचलिक संस्कृति को सामने लाना।
4. आधुनिकता (पंचलाइट) के आने से पुरानी सोच में बदलाव का संकेत देना।

निष्कर्ष:
कहानी का उद्देश्य है कि समाज व्यक्ति की योग्यता को पहचाने और अनुचित दण्ड तथा रूढ़ियों को छोड़कर एकता अपनाए।

7(a). 'मुक्तियज्ञ' खण्ड काव्य की संक्षिप्त कथा अपने शब्दों में लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: काव्य का स्वरूप:
'मुक्तियज्ञ' में देश की मुक्ति को एक यज्ञ माना गया है। इस यज्ञ के मुख्य आचार्य गाँधी जी हैं और आहुति देने वाले असंख्य सत्याग्रही हैं।

चरण 2: संक्षिप्त कथा (80 शब्दों के भीतर):
पन्त जी के 'मुक्तियज्ञ' में गाँधी जी के नेतृत्व में 1921 से 1947 तक का स्वतन्त्रता-संग्राम है। गाँधी जी डाण्डी पहुँचकर नमक-कानून तोड़ते हैं। साइमन कमीशन का बहिष्कार होता है। 1942 में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चलता है और कस्तूरबा का निधन होता है। 1947 में देश स्वतन्त्र होता है, पर विभाजन का दुःख मिलता है। नोआखली के दंगों से आहत गाँधी जी अनशन का संकल्प करते हैं और गोडसे की गोली से बलिदान हो जाते हैं।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. नमक-सत्याग्रह के बाद सरकार ने दमन-चक्र चलाया और जेलें सत्याग्रहियों से भर गईं।

2. गाँधी जी ने स्वदेशी, छुआछूत-निवारण और साम्प्रदायिक एकता पर भी बल दिया।
3. कवि ने गाँधी जी को युग-पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष:
काव्य का सन्देश है कि गाँधी जी का शरीर नष्ट हुआ, पर सत्य और अहिंसा के उनके विचार सदा जीवित रहेंगे।

OR

'मुक्तियज्ञ' के नायक गाँधीजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
सुमित्रानन्दन पन्त-रचित 'मुक्तियज्ञ' के नायक महात्मा गाँधी हैं। पूरा काव्य उनके नेतृत्व में चले स्वतन्त्रता-संग्राम पर आधारित है।

चरण 2: चरित्र-चित्रण (80 शब्दों के भीतर):
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: हर संघर्ष में अहिंसा ही उनका अस्त्र है।
2. दृढ़ संकल्पी: डाण्डी पहुँचकर उन्होंने नमक-कानून तोड़ा।
3. प्रेम और करुणा के मूर्त रूप: वे घृणा को प्रेम से जीतना चाहते हैं।
4. निर्भीक: दमन से न झुककर उन्होंने 1942 में 'भारत छोड़ो' का आह्वान किया।
5. लोकनायक और समाज-सुधारक: छुआछूत और साम्प्रदायिक भेद के विरोधी हैं।

चरण 3: प्रमाण-सहित अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
नोआखली के दंगों से दुःखी होकर उन्होंने अनशन का संकल्प किया। यह उनकी मानवता और सद्भाव की चिन्ता को दिखाता है। जेल में पत्नी कस्तूरबा के निधन पर भी वे कर्तव्य से नहीं हटे।

निष्कर्ष:
गाँधी जी त्याग, सत्य और अहिंसा के प्रतीक तथा आदर्श युग-नायक हैं।

7(b). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर दुःशासन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पात्र का परिचय:
द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी कृत 'सत्य की जीत' महाभारत के द्रौपदी-चीरहरण प्रसंग पर आधारित है। दुःशासन दुर्योधन का छोटा भाई और इस काव्य का प्रमुख खल पात्र है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. आज्ञाकारी पर अनैतिक: दुर्योधन के कहने पर वह भरी सभा में द्रौपदी को लाने चल पड़ता है, बिना उचित-अनुचित सोचे।
2. क्रूर और अभद्र: वह द्रौपदी के केश खींचकर उसे सभा में लाता है। स्त्री का सम्मान उसे नहीं आता।
3. अहंकारी: राजकुमार होने के मद में वह बड़ों और विद्वानों की उपस्थिति में भी मर्यादा भूल जाता है।
4. शक्ति का पुजारी: वह शस्त्र-बल को ही सत्य मानता है। नारी को दुर्बल समझकर उसका तिरस्कार करता है।
5. अन्त में पराजित: द्रौपदी को निर्वस्त्र करने के लिए हाथ बढ़ाता है, पर द्रौपदी के तेज के आगे काँप उठता है और असमर्थ हो जाता है।

निष्कर्ष:
दुःशासन पशुबल, अहंकार और अन्याय का प्रतीक है, जिसकी हार सत्य की जीत बनती है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर द्रोपदी चीर हरण का वृत्तान्त लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथा का आधार:
द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी-रचित 'सत्य की जीत' महाभारत के सभापर्व की द्रौपदी-चीरहरण की घटना पर आधारित खण्डकाव्य है।

चरण 2: चीरहरण का वृत्तान्त (80 शब्दों के भीतर):
दुर्योधन छल से पाण्डवों को जुए में बुलाता है। युधिष्ठिर सब कुछ हारकर द्रौपदी को भी दाँव पर लगा देते हैं और हार जाते हैं। दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन द्रौपदी को केश पकड़कर सभा में घसीट लाता है। द्रौपदी निडर होकर सभा से न्याय माँगती है। दुःशासन उसका चीर खींचने लगता है, पर द्रौपदी के आत्मबल के आगे वह पराजित हो जाता है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. द्रौपदी का तर्क है कि जो स्वयं को हार चुका, उसे मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार नहीं था।
2. विकर्ण न्याय के पक्ष में उसका समर्थन करता है।
3. अन्त में सभा अन्याय को धिक्कारती है और पाण्डव दासता से मुक्त होते हैं।

निष्कर्ष:
इस प्रसंग से सन्देश मिलता है कि पशुबल चाहे कितना बड़ा हो, सत्य और आत्मबल के सामने उसे झुकना पड़ता है।

7(c). 'रश्मिरथी' खण्ड काव्य के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: परिचय:
रामधारी सिंह 'दिनकर' के 'रश्मिरथी' में कुन्ती पाण्डवों की माता और कर्ण की जन्मदात्री हैं। पंचम सर्ग में वे कर्ण से मिलने जाती हैं।

चरण 2: चरित्र-चित्रण (80 शब्दों के भीतर):
1. ममतामयी माता: वे कर्ण को पुत्र कहकर स्नेह प्रकट करती हैं।
2. पश्चाताप से भरी: लोक-लज्जा के भय से त्यागे पुत्र के लिए उनके मन में ग्लानि है।
3. अपने पुत्रों की हितैषी: युद्ध से पहले वे कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में लाना चाहती हैं।
4. साहसी और स्पष्टवादी: वे सच्चाई को स्वीकार करने का साहस दिखाती हैं।
5. भावुक और असहाय: कर्ण के इनकार पर वे निराश लौटती हैं।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
कर्ण जब वचन देता है कि वह अर्जुन को छोड़कर किसी पाण्डव को नहीं मारेगा, तब कुन्ती को कुछ सान्त्वना मिलती है। यह प्रसंग उनके माँ के हृदय की पीड़ा को दिखाता है।

निष्कर्ष:
कुन्ती का चरित्र ममता, ग्लानि और स्वार्थ-मिश्रित वात्सल्य का मार्मिक चित्र है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर पंचम सर्ग की कथा का वर्णन कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सर्ग का परिचय:
'रश्मिरथी' के पंचम सर्ग में कुन्ती और कर्ण का भावपूर्ण संवाद है। इस सर्ग को 'माता की विनती' कहा जाता है।

चरण 2: पंचम सर्ग की कथा (80 शब्दों के भीतर):
युद्ध से पहले कुन्ती कर्ण के पास जाती हैं और उसे अपना ज्येष्ठ पुत्र बताती हैं। वे उससे पाण्डवों के पक्ष में आने की विनती करती हैं। कर्ण अपने अपमान की पीड़ा कहता है, पर दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ता। वह वचन देता है कि अर्जुन के सिवा किसी पाण्डव को नहीं मारेगा। इस प्रकार कुन्ती के पाँच पुत्र बने रहेंगे: अर्जुन या कर्ण।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. कर्ण कहता है कि जीवन भर उसे सूतपुत्र कहकर ठुकराया गया, तब माता कहाँ थीं।
2. वह मित्र-धर्म को सबसे ऊपर रखता है।
3. कुन्ती निराश लौट जाती हैं।

निष्कर्ष:
इस सर्ग में कर्ण की मित्र-निष्ठा और उदारता के साथ कुन्ती की ममता और पीड़ा दिखाई गई है।

7(d). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर द्वितीय सर्ग की कथा का उल्लेख कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: द्वितीय सर्ग की कथा (शब्द-सीमा के भीतर):
माता-पिता की मृत्यु से दुखी राज्यवर्धन संन्यास लेना चाहते हैं। तभी समाचार आता है कि मालवराज ने राज्यश्री के पति ग्रहवर्मा को मार दिया और राज्यश्री को बन्दी बना लिया। राज्यवर्धन शत्रु को हराते हैं, पर गौड़नरेश छल से उनकी हत्या कर देता है। हर्षवर्धन बहन की खोज में निकलते हैं और वन में राज्यश्री को आत्मदाह से बचा लेते हैं।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. 'त्यागपथी' के रचयिता रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' हैं। यह सम्राट् हर्षवर्धन के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक खण्डकाव्य है।
2. आगे के सर्गों में हर्ष की दिग्विजय और राज्यश्री को मानव-सेवा का उपदेश आता है।
3. इस सर्ग में एक के बाद एक पारिवारिक संकट आते हैं: बहनोई का वध, बड़े भाई की हत्या और बहन की विपत्ति।

निष्कर्ष:
द्वितीय सर्ग में शोक और संकट के बीच हर्षवर्धन पर राज्य तथा परिवार का दायित्व आ जाता है। यहीं से उनके कर्तव्य और त्यागमय जीवन की भूमिका बनती है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर नारी पात्र राजश्री का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: राज्यश्री का चरित्र-चित्रण (शब्द-सीमा के भीतर):
राज्यश्री हर्षवर्धन की छोटी बहन और 'त्यागपथी' की प्रमुख नारी पात्र है।
1. आदर्श नारी: वह शासिका होकर भी भीतर से बुद्ध की उपासिका है।
2. करुणामयी: माता-पिता, पति और भाई की मृत्यु ने उसे करुणा की मूर्ति बना दिया।
3. त्यागमयी: हर्ष के दिए राज्य को वह स्वीकार नहीं करती।
4. देशभक्त: वह हर्ष के राष्ट्र-साधन में सहयोग करती है।
5. कर्तव्यनिष्ठ: विधवा होकर भी धैर्य से अपने कर्तव्य निभाती है।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
मालवराज ने उसके पति ग्रहवर्मा को मारकर उसे बन्दी बनाया। भाई राज्यवर्धन भी उसी संकट में मारे गए। निराश होकर वह वन में आत्मदाह करने चली, पर हर्ष ने उसे बचा लिया।

निष्कर्ष:
राज्यश्री दुःख सहकर भी त्याग, करुणा और कर्तव्य का आदर्श प्रस्तुत करती है और काव्य की कथा को भावनात्मक गहराई देती है।

7(e). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथा वस्तु संक्षेप में लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथावस्तु (शब्द-सीमा के भीतर):
सरयू-तट के आश्रम में श्रवणकुमार नेत्रहीन माता-पिता की सेवा करता है। रात में राजा दशरथ आखेट पर आते हैं। जल भरने की ध्वनि को पशु की आवाज समझकर वे शब्दभेदी बाण चला देते हैं, जो श्रवण को लगता है। मरते समय श्रवण माता-पिता तक जल पहुँचाने को कहता है। पुत्र-वध का समाचार सुनकर पिता दशरथ को पुत्र-शोक में मरने का शाप देते हैं। राम के वनवास पर दशरथ यही घटना याद कर प्राण त्यागते हैं।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'श्रवणकुमार' के रचयिता डॉ. शिवबालक शुक्ल हैं। कथा वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में आए श्रवणकुमार-प्रसंग पर आधारित है।
2. काव्य नौ सर्गों में है: अयोध्या, आश्रम, आखेट, श्रवण, दशरथ, सन्देश, अभिशाप, निर्वाण और उपसंहार।

निष्कर्ष:
कथा का मुख्य सन्देश माता-पिता की सेवा का महत्त्व और अनजाने में हुए पाप का कठोर फल है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: श्रवणकुमार का चरित्र-चित्रण (शब्द-सीमा के भीतर):
श्रवणकुमार 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य का नायक है।
1. मातृ-पितृ भक्त: वह सुबह से शाम तक नेत्रहीन माता-पिता की सेवा करता है।
2. सत्यवादी: वह मृत्यु के समय भी दशरथ से सच्ची बात कहता है।
3. क्षमाशील: बाण लगने पर भी वह दशरथ पर क्रोध नहीं करता।
4. सन्तोषी: वल्कल वस्त्र और वन के कन्द-मूल में ही उसे सुख है।
5. धर्मनिष्ठ: वह सदाचार और अतिथि-सत्कार को महत्त्व देता है।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
मृत्यु के समय भी उसे अपनी पीड़ा से अधिक माता-पिता की चिन्ता है। वह दशरथ से कहता है कि जल उन तक पहुँचा दें। यही उसकी श्रेष्ठ पितृ-भक्ति का प्रमाण है।

निष्कर्ष:
श्रवणकुमार आदर्श पुत्र और उच्च मानवीय गुणों का जीवित उदाहरण है।

7(f). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी का चरित्राङ्कन कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गाँधीजी का चरित्रांकन (शब्द-सीमा के भीतर):
'आलोकवृत्त' के नायक गाँधीजी सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं।
1. सत्य-अहिंसा के उपासक: वे पशुबल का सामना आत्मबल से करते हैं।
2. देशप्रेमी: भारत की स्वतन्त्रता के लिए वे जेल और कष्ट सहते हैं।
3. मानवतावादी: वे रंगभेद और छुआछूत का विरोध करते हैं।
4. साम्प्रदायिक एकता के समर्थक: हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उपवास करते हैं।

5. आत्मविजयी और आस्तिक: वे अपनी दुर्बलताओं को जीतते हैं और साधन की पवित्रता पर बल देते हैं।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'आलोकवृत्त' के रचयिता गुलाब खण्डेलवाल हैं। आठ सर्गों के इस काव्य में गाँधीजी के जीवन और स्वतन्त्रता-संग्राम का वर्णन है।
2. दक्षिण अफ्रीका में रेल की घटना से सत्याग्रह का जन्म, दाण्डी यात्रा और भारत छोड़ो आन्दोलन उनके नेतृत्व के प्रमाण हैं।

निष्कर्ष:
गाँधीजी प्रकाश-पुंज के समान हैं। काव्य का नाम 'आलोकवृत्त' उनके जीवन के इसी प्रकाश को व्यक्त करता है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कथा अपने शब्दों में लिखनी है। उत्तर अधिकतम 80 शब्दों में देना है।

चरण 2: कथासार (अधिकतम 80 शब्द):
गुलाब खण्डेलवाल के 'आलोकवृत्त' में गाँधी जी का जीवन और स्वतन्त्रता-संग्राम वर्णित है। पोरबन्दर में जन्मे मोहनदास ने माता को मद्य-मांस त्याग का वचन दिया और इंग्लैण्ड से बैरिस्टर बने। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद झेलकर सत्याग्रह अपनाया। भारत में चम्पारन, असहयोग, दाण्डी-यात्रा और भारत छोड़ो आन्दोलन चलाए। देश स्वतन्त्र हुआ, पर दंगों से वे दुःखी रहे।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों की गिनती से बाहर):

1. काव्य आठ सर्गों में है। प्रथम सर्ग में पराधीन भारत की दशा और गाँधी जी का जन्म आता है।
2. द्वितीय सर्ग में बचपन की भूल, पश्चात्ताप, विवाह और विलायत-यात्रा है।
3. चतुर्थ से सप्तम सर्ग में साबरमती आश्रम, चम्पारन-खेड़ा, नमक-सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन का वर्णन है।
4. अन्तिम सर्ग में स्वतन्त्रता का उदय और शान्ति-प्रार्थना है।

निष्कर्ष:
काव्य गाँधी जी को सत्य और अहिंसा के आलोक-पुंज के रूप में प्रस्तुत करता है।

8(a). दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षि व्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास भारवि भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते । इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं गौरवं अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वं च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते । इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति । ततः सुष्ठूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' से लिया गया है, जिसमें संस्कृत भाषा की महिमा और उसके महाकवियों का गुणगान है। इसमें बताया गया है कि संस्कृत भारत की संस्कृति की रक्षक है। यह अंश दिए गए दो गद्यांशों में से पहले का अनुवाद है।

चरण 2: शब्दार्थ:
आदिकविः = पहले कवि
कविकुलगुरुः = कवियों के गुरु

ग्रन्थरत्नैः = ग्रन्थ रूपी रत्नों से
विराजन्ते = शोभित हैं
अखण्डत्वम् = अखण्डता
गीर्वाणभारती = देववाणी, अर्थात् संस्कृत

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कवियों के गुरु कालिदास तथा भास, भारवि, भवभूति आदि अन्य महाकवि अपने ग्रन्थ-रत्नों से आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं। हमें इस भाषा का माता के समान आदर और वन्दन करना चाहिए, क्योंकि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता की रक्षा संस्कृत से ही हो सकती है। यह संस्कृत भाषा सब भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ है। इसीलिए ठीक कहा गया है: भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य भाषा देववाणी संस्कृत है।

चरण 4: सार:
संस्कृत केवल भाषा नहीं, हमारी संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की आधार है।

निष्कर्ष:
सन्दर्भ सहित हिन्दी अनुवाद पूरा हुआ।

OR

दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात् । अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति । सा मैत्रेयी उवाच - येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम् । यदेव भगवान् केवलममृतत्वसाधनं जानाति, तदेव मे ब्रूहि । याज्ञवल्क्य उवाच - प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे । एहि उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्वसाधनम् ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश संस्कृत-पाठ्यपुस्तक में संकलित याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के संवाद से लिया गया है। इसका मूल स्रोत बृहदारण्यक उपनिषद् है। यह अंश दिए गए दो गद्यांशों में से दूसरे का अनुवाद है।

चरण 2: शब्दार्थ:
उपकरणवताम् = साधन वाले लोगों का
अमृतत्वसाधनम् = अमरता पाने का उपाय
वित्तेन = धन से
ब्रूहि = बोलिए
व्याख्यास्यामि = समझाऊँगा
एहि = आओ
उपविश = बैठो

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
याज्ञवल्क्य बोले: जैसा साधन-सम्पन्न लोगों का जीवन होता है, वैसा ही तुम्हारा जीवन होगा। धन से अमरता की तो कोई आशा नहीं है।
मैत्रेयी ने कहा: जिससे मैं अमर न हो पाऊँ, उससे मैं क्या करूँगी? भगवन्! आप केवल अमरता का जो साधन जानते हैं, वही मुझे बताइए।
याज्ञवल्क्य ने कहा: तुम हमारी प्रिय हो और प्रिय ही बोल रही हो। आओ, बैठो, मैं तुम्हें अमरता का साधन समझाता हूँ।

चरण 4: सार:
मैत्रेयी ने संसार की सम्पत्ति ठुकराकर ज्ञान का मार्ग चुना। ऋषि ने उसकी जिज्ञासा से प्रसन्न होकर उपदेश देना स्वीकार किया।

निष्कर्ष:
सन्दर्भ सहित हिन्दी अनुवाद पूरा हुआ।

8(b). दिए गए श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: चुना गया श्लोक:
इस उत्तर में पहले श्लोक 'विद्या विवादाय धनं मदाय...' का ससन्दर्भ अनुवाद दिया गया है।

चरण 2: सन्दर्भ:
यह श्लोक संस्कृत-खण्ड के नीतिपरक सुभाषितों में से है। इसमें सज्जन और दुष्ट की प्रकृति का भेद बताया गया है। यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है।

चरण 3: शब्दार्थ:
विवादाय = वाद-विवाद के लिए। मदाय = घमंड के लिए। परिपीडनाय = कष्ट देने के लिए। खलस्य = दुर्जन का। साधोः = सज्जन का। एतत् = यह। विपरीतम् = उलटा।

चरण 4: हिन्दी अनुवाद:
दुर्जन की विद्या झगड़े के लिए, धन अहंकार के लिए और शक्ति दूसरों को दुःख देने के लिए होती है। सज्जन की ये तीनों वस्तुएँ इसके विपरीत होती हैं, अर्थात् उसकी विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति रक्षा के लिए होती है।

चरण 5: भावार्थ:
मनुष्य का स्वभाव ही यह तय करता है कि उसके पास की विद्या, धन और बल समाज के लिए वरदान बनेंगे या अभिशाप।

निष्कर्ष:
सज्जन बनकर विद्या, धन और शक्ति को लोकहित में लगाना ही श्रेष्ठ मार्ग है।

OR

दिए गए श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: चुना गया श्लोक:
इस उत्तर में दूसरे श्लोक 'जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः...' का ससन्दर्भ अनुवाद दिया गया है।

चरण 2: सन्दर्भ:
यह श्लोक संस्कृत-खण्ड में संकलित नीतिपरक सुभाषित है। इसमें थोड़ा-थोड़ा करके निरन्तर संचय करने का महत्त्व बताया गया है। यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है।

चरण 3: शब्दार्थ:
जलबिन्दुनिपातेन = पानी की बूँदें गिरने से। क्रमशः = धीरे-धीरे। पूर्यते = भर जाता है। घटः = घड़ा। हेतुः = कारण। सर्वविद्यानां = सब विद्याओं का।

चरण 4: हिन्दी अनुवाद:
पानी की एक-एक बूँद गिरने से घड़ा धीरे-धीरे भर जाता है। यही सभी विद्याओं, धर्म और धन की प्राप्ति का कारण है।

चरण 5: भावार्थ:
जैसे बूँद-बूँद से घड़ा भरता है, वैसे ही प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा सीखने, थोड़ा-थोड़ा पुण्य करने और थोड़ा-थोड़ा धन जोड़ने से बड़ा फल मिलता है।

निष्कर्ष:
लगातार परिश्रम और धैर्य से ही विद्या, धर्म और धन का भण्डार भरता है।

9. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **उल्टी गंगा बहाना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
दिए गए मुहावरों में से 'उल्टी गंगा बहाना' का अर्थ लिखकर उसका वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
गंगा पहाड़ से मैदान की ओर बहती है। उसे उलटा बहाना असंभव और अस्वाभाविक है। इसलिए इसका अर्थ है: प्रचलित नियम या परंपरा के विरुद्ध काम करना, अनहोनी या विपरीत बात करना।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
जब सब लोग पुराने रास्ते पर चल रहे थे, तब उसने सबके विरुद्ध जाकर उल्टी गंगा बहा दी।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: सामान्य नियम के उलट काम करना।

OR

निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **ओखली में सिर देना**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ मुहावरा 'ओखली में सिर देना' हल करना है। अर्थ के साथ वाक्य-प्रयोग देना है।

चरण 2: अर्थ:
ओखली में अनाज मूसल से कूटा जाता है। यदि कोई उसमें सिर दे दे तो चोट निश्चित है। अतः इसका अर्थ है: जान-बूझकर स्वयं को कठिनाई या खतरे में डालना। जो काम कठिन हो, उसे स्वीकार कर लेना भी इसी से कहा जाता है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
बिना तैयारी के बड़े नेता से बहस करके उसने ओखली में सिर दे दिया।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: जान-बूझकर संकट मोल लेना।

OR

निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **काठ का उल्लू**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
दिए गए मुहावरों में से 'काठ का उल्लू' का अर्थ लिखना और वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
काठ यानी लकड़ी का बना उल्लू न सोच सकता है, न बोल सकता है। इसलिए यह मुहावरा उस व्यक्ति के लिए बोला जाता है जो बहुत मूर्ख हो, जिसे कुछ समझ न आए और जो केवल दूसरों के कहे पर चले।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
तुम तो काठ के उल्लू निकले, इतनी सरल बात भी समझ नहीं पाए।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: महामूर्ख, बुद्धिहीन व्यक्ति।

OR

निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **खून खौलना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: मुहावरे का अर्थ:
मुहावरा: खून खौलना
अर्थ: बहुत अधिक क्रोध आना, अन्याय या अपमान देखकर आपे से बाहर हो जाना।

चरण 2: वाक्य में प्रयोग:
निर्दोष बच्चे पर अत्याचार होते देखकर राहुल का खून खौल उठा।

चरण 3: ध्यान देने की बात:
यह मुहावरा तब बोला जाता है जब किसी के अनुचित व्यवहार से मन में तीव्र गुस्सा उठे। वाक्य में इसका प्रयोग करते समय क्रिया का रूप वाक्य के अनुसार बदल जाता है, जैसे खून खौल उठा, खून खौल रहा है।

अंतिम उत्तर:
खून खौलना = बहुत क्रोध आना। वाक्य: निर्दोष बच्चे पर अत्याचार होते देखकर राहुल का खून खौल उठा।

10(i). *अपठित गद्यांश:* शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए अनिवार्य है। अज्ञान के अंधकार में जीना तो मृत्यु से भी अधिक कष्टकारी है। ज्ञान के प्रकाश में ही जीवन के रहस्य खुलते हैं और हमें अपनी पहिचान मिलती है। शिक्षा मनुष्य को मष्तिष्क और देह का उचित प्रयोग करना सिखाती है। वह शिक्षा जो मानव को पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिन्तन न दे व्यर्थ है। यदि हमारी शिक्षा सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छे नागरिक नहीं बना सकती तो उससे क्या लाभ? संसार के सभी वैभव व सुख साधन भी मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बना सकते जब तक कि मनुष्य को आत्मिक ज्ञान न हो।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का केंद्रीय भाव:
पूरा गद्यांश शिक्षा के बारे में है। इसमें बताया गया है कि शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास के लिए जरूरी है, वह अज्ञान का अंधकार दूर करती है और अच्छा नागरिक बनाती है।

चरण 2: शीर्षक चुनना:
शीर्षक छोटा, सार्थक और मुख्य विषय से जुड़ा होना चाहिए। इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है 'शिक्षा का महत्त्व'।

अंतिम उत्तर:
शीर्षक: शिक्षा का महत्त्व।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए अनिवार्य है। अज्ञान के अंधकार में जीना तो मृत्यु से भी अधिक कष्टकारी है। ज्ञान के प्रकाश में ही जीवन के रहस्य खुलते हैं और हमें अपनी पहिचान मिलती है। शिक्षा मनुष्य को मष्तिष्क और देह का उचित प्रयोग करना सिखाती है। वह शिक्षा जो मानव को पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिन्तन न दे व्यर्थ है। यदि हमारी शिक्षा सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छे नागरिक नहीं बना सकती तो उससे क्या लाभ? संसार के सभी वैभव व सुख साधन भी मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बना सकते जब तक कि मनुष्य को आत्मिक ज्ञान न हो।

(ii) शिक्षा को मनुष्य के लिए क्यों अनिवार्य माना गया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न है कि गद्यांश में शिक्षा को मनुष्य के लिए अनिवार्य क्यों कहा गया है। उत्तर गद्यांश के अलग-अलग वाक्यों से जोड़कर लिखना है।

चरण 2: कारण:
1. शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए आवश्यक है।
2. अज्ञान के अंधकार में जीना मृत्यु से भी अधिक कष्टदायक है, शिक्षा इस अंधकार को दूर करती है।
3. ज्ञान के प्रकाश में जीवन के रहस्य खुलते हैं और मनुष्य को अपनी पहचान मिलती है।
4. शिक्षा मस्तिष्क और शरीर का उचित उपयोग सिखाती है।

निष्कर्ष:
इन्हीं कारणों से शिक्षा मनुष्य के लिए अनिवार्य मानी गई है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए अनिवार्य है। अज्ञान के अंधकार में जीना तो मृत्यु से भी अधिक कष्टकारी है। ज्ञान के प्रकाश में ही जीवन के रहस्य खुलते हैं और हमें अपनी पहिचान मिलती है। शिक्षा मनुष्य को मष्तिष्क और देह का उचित प्रयोग करना सिखाती है। वह शिक्षा जो मानव को पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिन्तन न दे व्यर्थ है। यदि हमारी शिक्षा सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छे नागरिक नहीं बना सकती तो उससे क्या लाभ? संसार के सभी वैभव व सुख साधन भी मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बना सकते जब तक कि मनुष्य को आत्मिक ज्ञान न हो।

(iii) सभी वैभव प्राप्त व्यक्ति कब तक सुख नहीं प्राप्त कर सकता?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि सारे वैभव और सुख के साधन पाकर भी मनुष्य कब तक सुखी नहीं हो सकता। इसका उत्तर गद्यांश के अंतिम वाक्य में है।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:
गद्यांश के अनुसार संसार के सभी वैभव और सुख-साधन मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बना सकते, जब तक उसे आत्मिक ज्ञान न हो।

निष्कर्ष:
जब तक मनुष्य को आत्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक वह सुख नहीं पा सकता।

OR

10(i). *अपठित गद्यांश:* जीवन में सफल वही है, जो उपयुक्त समय पर उपयुक्त चुनाव करना जानता है। कुछ चुनाव हमारे वश में नहीं हैं - जैसे माता-पिता का, जन्म-मृत्यु का। किन्तु कुछ हमारे वश में हैं जिन पर हमारी सफलता असफलता निर्भर है - जैसे संगति का चुनाव, आलस्य या परिश्रम का चुनाव आदि। संगति का चुनाव इन सब में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस चुनाव पर हमारा आचरण, कर्म, विचार, भाषा - स्तर, मनुष्यता और हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है। मनुष्य का चित्त बुराइयों की ओर जल्दी आकृष्ट हो जाता है। जिस प्रकार पानी सदैव नीचे की ओर बहता है, उसी प्रकार मनुष्य का मन भी बुराइयों की ओर शीघ्र भागता है। हम विवेक से काम लेकर अच्छे और बुरे का चुनाव कर सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का केन्द्रीय भाव:
गद्यांश की शुरुआत में कहा गया है कि सफल वही है जो सही समय पर सही चुनाव करता है।

आगे बताया गया है कि माता-पिता और जन्म-मृत्यु का चुनाव हमारे वश में नहीं है, पर संगति, आलस्य या परिश्रम का चुनाव हमारे हाथ में है।
इनमें भी संगति का चुनाव सबसे अधिक महत्वपूर्ण बताया गया है, क्योंकि इसी पर आचरण, विचार और सफलता निर्भर करते हैं।

चरण 2: शीर्षक का चयन:
शीर्षक छोटा, सार्थक और पूरे गद्यांश का भाव बताने वाला होना चाहिए।
यहाँ पूरा गद्यांश सही चुनाव और विशेष रूप से संगति के चुनाव पर टिका है।

अंतिम उत्तर:
उचित शीर्षक: 'चुनाव का महत्व' (अन्य उपयुक्त शीर्षक: 'संगति का प्रभाव' या 'सही चुनाव और सफलता')।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* जीवन में सफल वही है, जो उपयुक्त समय पर उपयुक्त चुनाव करना जानता है। कुछ चुनाव हमारे वश में नहीं हैं - जैसे माता-पिता का, जन्म-मृत्यु का। किन्तु कुछ हमारे वश में हैं जिन पर हमारी सफलता असफलता निर्भर है - जैसे संगति का चुनाव, आलस्य या परिश्रम का चुनाव आदि। संगति का चुनाव इन सब में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस चुनाव पर हमारा आचरण, कर्म, विचार, भाषा - स्तर, मनुष्यता और हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है। मनुष्य का चित्त बुराइयों की ओर जल्दी आकृष्ट हो जाता है। जिस प्रकार पानी सदैव नीचे की ओर बहता है, उसी प्रकार मनुष्य का मन भी बुराइयों की ओर शीघ्र भागता है। हम विवेक से काम लेकर अच्छे और बुरे का चुनाव कर सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

(ii) मानव मन की तुलना किससे की गई है और क्यों?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से संबंधित अंश:
गद्यांश में लिखा है, 'जिस प्रकार पानी सदैव नीचे की ओर बहता है, उसी प्रकार मनुष्य का मन भी बुराइयों की ओर शीघ्र भागता है।'

चरण 2: तुलना और कारण:
मानव मन की तुलना नीचे की ओर बहने वाले पानी से की गई है।
पानी बिना किसी प्रयास के ढलान की ओर बह जाता है। इसी तरह मनुष्य का चित्त भी बिना प्रयास के बुराइयों की ओर जल्दी आकृष्ट हो जाता है।
बुराई की ओर जाना सरल है, इसलिए मन को रोकने के लिए विवेक की आवश्यकता होती है।

अंतिम उत्तर:
मानव मन की तुलना नीचे की ओर बहते पानी से की गई है, क्योंकि वह पानी की तरह ही सहज रूप से बुराइयों की ओर चला जाता है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* जीवन में सफल वही है, जो उपयुक्त समय पर उपयुक्त चुनाव करना जानता है। कुछ चुनाव हमारे वश में नहीं हैं - जैसे माता-पिता का, जन्म-मृत्यु का। किन्तु कुछ हमारे वश में हैं जिन पर हमारी सफलता असफलता निर्भर है - जैसे संगति का चुनाव, आलस्य या परिश्रम का चुनाव आदि। संगति का चुनाव इन सब में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस चुनाव पर हमारा आचरण, कर्म, विचार, भाषा - स्तर, मनुष्यता और हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है। मनुष्य का चित्त बुराइयों की ओर जल्दी आकृष्ट हो जाता है। जिस प्रकार पानी सदैव नीचे की ओर बहता है, उसी प्रकार मनुष्य का मन भी बुराइयों की ओर शीघ्र भागता है। हम विवेक से काम लेकर अच्छे और बुरे का चुनाव कर सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

(iii) जीवन में कौन सफलता प्राप्त कर सकता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का कथन:
गद्यांश के आरंभ में कहा गया है कि जीवन में सफल वही है जो उपयुक्त समय पर उपयुक्त चुनाव करना जानता है।
अंत में भी लिखा है कि विवेक से काम लेकर अच्छे और बुरे का चुनाव करने वाला सफलता प्राप्त कर सकता है।

चरण 2: उत्तर:
जीवन में वही व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है जो सही समय पर सही चुनाव करता है।
ऐसा व्यक्ति संगति, परिश्रम और आलस्य जैसे विषयों में सोच-समझकर निर्णय लेता है और अच्छे-बुरे का भेद विवेक से करता है।

अंतिम उत्तर:
सफलता वही पाता है जो विवेकपूर्वक सही समय पर उचित चुनाव करता है।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: तरंग - तुरंग

(A) हाथी और घोड़ा

(B) अस्थिपंजर और निर्धन

(C) लहर और घोड़ा

(D) तेज आवाज और धीमी आवाज

Correct Answer: (C) लहर और घोड़ा

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
तरंग और तुरंग दो मिलते-जुलते शब्द हैं। इनके सही अर्थ वाला युग्म चुनना है।

चरण 2: शब्दों के अर्थ:
तरंग = लहर, जैसे नदी या सागर की तरंग।
तुरंग = घोड़ा। जैसे तुरंग पर सवार राजा।
अतः सही युग्म है: लहर और घोड़ा।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) हाथी और घोड़ा: तरंग का अर्थ हाथी नहीं होता।
(B) अस्थिपंजर और निर्धन: यह अर्थ-युग्म किसी और शब्द-जोड़ी का है, तरंग-तुरंग

का नहीं।
(D) तेज आवाज और धीमी आवाज: दोनों शब्दों में से कोई भी आवाज के अर्थ में नहीं आता।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) लहर और घोड़ा है।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: भवन - भुवन

(A) घर - संसार
(B) होना - भूमि
(C) व्यापक - संसार
(D) होनी - अनहोनी

Correct Answer: (A) घर - संसार

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
भवन और भुवन में केवल एक मात्रा का अन्तर है, पर अर्थ बिलकुल अलग हैं। हमें दोनों के सही अर्थ चुनने हैं।

चरण 2: अर्थ जानें:
भवन = घर, मकान, इमारत।
भुवन = संसार, जगत्, लोक। जैसे त्रिभुवन का अर्थ तीनों लोक है।
सही युग्म: घर - संसार।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(B) होना - भूमि: भवन का अर्थ होना नहीं है। होना अर्थ भव शब्द से जुड़ता है।
(C) व्यापक - संसार: भवन का अर्थ व्यापक नहीं है, केवल दूसरा अर्थ ठीक है।
(D) होनी - अनहोनी: ये दोनों परस्पर विलोम शब्द हैं, इनका संबंध भवन-भुवन से

नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) घर - संसार है।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **नाग**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
नाग शब्द एक जैसा दिखता है, पर प्रसंग बदलने पर उसका अर्थ भी बदल जाता है। इसलिए यह बहुअर्थक शब्द है।

चरण 2: दो अर्थ:
1. साँप या सर्प: विशेष रूप से फन वाला विषैला साँप। जैसे: खेत में एक काला नाग दिखाई दिया।
2. हाथी: संस्कृत में हाथी को भी नाग कहते हैं। जैसे: जंगल में नाग झुण्ड बनाकर चल रहे थे।

अंतिम उत्तर:
नाग के दो अर्थ हैं: (1) साँप, (2) हाथी। इसका एक अन्य अर्थ पर्वत भी है।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **नाक**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
नाक शब्द हिन्दी में शरीर के अंग के अर्थ में तो आता ही है, संस्कृत में इसका एक और अर्थ भी है।

चरण 2: दो अर्थ:
1. नासिका: चेहरे पर साँस लेने और सूँघने का अंग। जैसे: ठण्ड में मेरी नाक बहने लगी।
2. स्वर्ग: संस्कृत में नाक का अर्थ स्वर्गलोक भी है। जैसे: पुण्य करने वाले को नाक की प्राप्ति होती है।

अंतिम उत्तर:
नाक के दो अर्थ हैं: (1) नासिका, (2) स्वर्ग।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **द्विज**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'द्विज' का शाब्दिक अर्थ है दो बार जन्म लेने वाला। इसी से इसके कई अर्थ बने हैं। यहाँ दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. द्विज = ब्राह्मण (संस्कार के बाद दूसरा जन्म माना जाने के कारण)।
2. द्विज = पक्षी, क्योंकि पक्षी पहले अण्डे के रूप में और फिर चूजे के रूप में जन्म लेता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
द्विज (ब्राह्मण) - द्विज ने यज्ञ का विधिपूर्वक संचालन किया।
द्विज (पक्षी) - भोर होते ही वृक्षों पर द्विज चहचहाने लगे।

अंतिम उत्तर:
'द्विज' के दो अर्थ हैं: (1) ब्राह्मण, (2) पक्षी।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **मित्र**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'मित्र' बहुअर्थक शब्द है, यानी इसके दो या अधिक अर्थ होते हैं। यहाँ दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. मित्र = दोस्त, सखा या साथी।
2. मित्र = सूर्य।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
मित्र (दोस्त) - सच्चा मित्र संकट में साथ नहीं छोड़ता।
मित्र (सूर्य) - मित्र के उगते ही अन्धकार दूर हो जाता है।

अंतिम उत्तर:
'मित्र' के दो अर्थ हैं: (1) दोस्त, (2) सूर्य।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: जो पढ़ना - लिखना जानता हो -

(A) विद्वान

(B) पंडित

(C) साक्षर

(D) छात्र

Correct Answer: (C) साक्षर

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आशय:
पूछा गया है कि जो पढ़ना और लिखना जानता हो, उसके लिए एक शब्द कौन-सा है।

चरण 2: सही उत्तर:
इस वाक्यांश का एक शब्द साक्षर है। साक्षर वह है जिसे अक्षर-ज्ञान हो और जो पढ़-लिख सके। इसका उलटा शब्द निरक्षर है।

चरण 3: गलत विकल्प क्यों गलत हैं:
(A) विद्वान: जो विद्या में निपुण हो, यानी बहुत ज्ञानी।
(B) पंडित: शास्त्रों का ज्ञाता, जानकार व्यक्ति।
(D) छात्र: जो विद्यालय में पढ़ता हो। छात्र पढ़ना नहीं भी जान सकता है, जैसे नया दाखिल बालक।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) साक्षर है।

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: वंदना करने योग्य -

(A) स्तुति

(B) प्रार्थना

(C) देवता

(D) वंदनीय

Correct Answer: (D) वंदनीय

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
वाक्यांश है: वंदना करने योग्य। इसका एक शब्द चुनना है।

चरण 2: सही शब्द:
वन्द् धातु से वंदना बना है, जिसका अर्थ प्रणाम या स्तुति करना है। जो वंदना के योग्य हो, उसे वंदनीय कहते हैं। योग्य के अर्थ में अनीय प्रत्यय लगता है। जैसे पूजा से पूजनीय, दर्शन से दर्शनीय।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) स्तुति: गुणों का गान या प्रशंसा।
(B) प्रार्थना: विनयपूर्वक माँगना।
(C) देवता: जिसकी पूजा की जाए, वह देव।
ये तीनों वंदना के योग्य व्यक्ति का अर्थ नहीं देते।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) वंदनीय है।

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: घर के सामानों को रख दो

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: घर के सामानों को रख दो।
अशुद्ध प्रयोग 'सामानों' है।

चरण 2: अशुद्धि का कारण:
'सामान' शब्द समूह का बोध कराता है और हिन्दी में सामान्यतः एकवचन में ही चलता है। इसका बहुवचन रूप 'सामानों' शुद्ध नहीं माना जाता।
इसी प्रकार 'घर के सामान' के स्थान पर 'घर का सामान' लिखना ठीक है, क्योंकि 'सामान' पुल्लिंग एकवचन है और संबंध कारक उसी के अनुसार 'का' आता है।
यह वचन और संबंध कारक की अशुद्धि है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
घर का सामान रख दो।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: घर का सामान रख दो। ('सामानों' का बहुवचन प्रयोग गलत था।)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: मेरे को फल ले आओ

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: मेरे को फल ले आओ।
इस वाक्य में 'मेरे को' प्रयोग गलत है।

चरण 2: अशुद्धि का कारण:

'मैं' सर्वनाम के साथ कारक चिह्न 'को' जुड़ने पर उसका रूप 'मुझे' हो जाता है, 'मेरे को' नहीं।
अतः यह कारक-प्रयोग की अशुद्धि है। यहाँ 'के लिए' का प्रयोग भी हो सकता है, तब रूप 'मेरे लिए' बनता है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
मेरे लिए फल ले आओ।
अथवा: मुझे फल ला दो।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: मेरे लिए फल ले आओ। (सर्वनाम और कारक चिह्न के गलत मेल की अशुद्धि दूर की गई।)

11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: पक्षी पेड़ में हैं

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य: पक्षी पेड़ में हैं।
यहाँ 'में' कारक-चिह्न का गलत प्रयोग हुआ है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:
पक्षी पेड़ की डाल या शाखा पर बैठते हैं, पेड़ के भीतर नहीं रहते। जो वस्तु किसी के ऊपर टिकी हो, उसके लिए 'पर' आता है।
'में' भीतर होने का भाव देता है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: पक्षी पेड़ पर हैं। (दोष: कारक/प्रयोग)

11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: शिक्षक ने क्षात्र की प्रशंसा की

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: शिक्षक ने क्षात्र की प्रशंसा की।
अशुद्ध शब्द 'क्षात्र' है।

चरण 2: अशुद्धि का कारण:
'विद्यार्थी' के अर्थ में शुद्ध शब्द 'छात्र' है, जो 'छत्र' (छाता) से बना है और इसमें 'छ' आता है। 'क्ष' लिखना वर्तनी की भूल है।
'क्षात्र' नाम का एक अलग शब्द है, जिसका अर्थ क्षत्रिय से संबंधित है। इसलिए यहाँ अर्थ के अनुसार भी 'छात्र' ही उचित है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
शिक्षक ने छात्र की प्रशंसा की।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: शिक्षक ने छात्र की प्रशंसा की। (वर्तनी की अशुद्धि 'क्षात्र' को 'छात्र' करके ठीक की गई।)

12(a). 'करुण' अथवा 'शृंगार' रस की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ दो रस दिए हैं, 'करुण' और 'शृंगार'। इस पृष्ठ पर पहला रस, करुण रस, परिभाषा और उदाहरण सहित लिखा है।

चरण 2: परिभाषा:
जहाँ किसी प्रियजन के बिछुड़ने, मरने या किसी हानि के कारण मन में शोक उत्पन्न हो और वह विभाव, अनुभाव व संचारी भाव से पुष्ट होकर रस का रूप ले ले, वहाँ करुण रस होता है। इसका स्थायी भाव शोक है।

चरण 3: उदाहरण:
राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ, राउ गयउ सुरधाम॥
(तुलसीदास, रामचरितमानस)

चरण 4: उदाहरण की व्याख्या:
राम के वन जाने के वियोग में राजा दशरथ बार-बार राम का नाम लेते हुए शरीर छोड़ देते हैं।
आलम्बन: राम का वियोग।
आश्रय: दशरथ और पाठक।
अनुभाव: राम-राम की रट।
संचारी भाव: विषाद, स्मृति, मोह।
स्थायी भाव शोक पुष्ट होकर करुण रस बन जाता है।

निष्कर्ष:
शोक पर आधारित रस करुण रस है और ऊपर की चौपाई उसका उदाहरण है।

12(b). 'रूपक' अथवा 'अनुप्रास' अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
दो अलंकार दिए हैं। इस समाधान में पहला, 'रूपक अलंकार', लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
जहाँ उपमेय और उपमान में कोई भेद न रहे, यानी उपमेय को ही उपमान बता दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है। इसमें 'जैसा', 'सा' जैसे तुलना-वाचक शब्द नहीं होते। यह अर्थालंकार है।

चरण 3: उदाहरण:
चरन-कमल बंदौं हरि राई।
(सूरदास)

चरण 4: स्पष्टीकरण:
यहाँ हरि के चरण उपमेय हैं और कमल उपमान है। कवि ने चरणों को ही कमल कह दिया है, दोनों में अभेद कर दिया है। कोई तुलना-वाचक शब्द भी नहीं है। इसलिए रूपक अलंकार है।

अंतिम उत्तर:
उपमेय में उपमान का अभेद आरोप होने से रूपक अलंकार होता है, और 'चरन-कमल' उसका उदाहरण है।

12(c). 'चौपाई' अथवा 'दोहा' छन्द की परिभाषा लिखकर उदाहरण भी लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का आशय:
दो छन्दों में से एक की परिभाषा और उदाहरण देना है। प्रश्न में पहला नाम 'चौपाई' है,

इसलिए इस पृष्ठ पर चौपाई छन्द का उत्तर लिखा गया है।

चरण 2: परिभाषा:
जिस मात्रिक सम छन्द के चारों चरणों में 16-16 मात्राएँ हों, उसे चौपाई कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण के अन्त में जगण या तगण नहीं आता। इसे प्रायः दो-दो चरणों की अर्द्धाली के रूप में लिखा जाता है।

चरण 3: उदाहरण:
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
(तुलसीदास, हनुमान चालीसा)

चरण 4: मात्रा-गणना:
जय (2) + हनुमान (5) + ज्ञान (3) + गुन (2) + सागर (4) = 16 मात्राएँ।
जय (2) + कपीस (4) + तिहुँ (2) + लोक (3) + उजागर (5) = 16 मात्राएँ।
दोनों चरणों में 16 मात्राएँ हैं, इसलिए यह चौपाई का उदाहरण है।

निष्कर्ष:
16 मात्रा प्रति चरण वाला छन्द चौपाई है।

13. बैंक प्रबन्धक के नाम एक आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें किसी व्यवसाय को स्थापित करने हेतु ऋण की माँग की गई हो।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पत्र की पहचान:
यह बैंक प्रबन्धक को लिखा जाने वाला आवेदन-पत्र है, जो औपचारिक पत्र की श्रेणी में आता है। इसमें अपना परिचय, व्यवसाय की जानकारी, कितना ऋण चाहिए, उसका उपयोग और चुकाने का आश्वासन देना चाहिए।

चरण 2: आवेदन-पत्र:
प्रेषक:
क ख ग,
12, सुभाष नगर,
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 10 अप्रैल, 2026

सेवा में,
प्रबन्धक महोदय,
स्टेट बैंक, मुख्य शाखा,
वाराणसी

विषय: व्यवसाय स्थापित करने हेतु ऋण प्राप्त करने का आवेदन-पत्र।

महोदय,

मैं वाराणसी का निवासी हूँ और स्नातक तक शिक्षा प्राप्त कर चुका हूँ। नौकरी न मिलने के कारण मैं अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करना चाहता हूँ। मैंने कपड़ों की एक दुकान खोलने की योजना बनाई है, जिसके लिए स्थान भी देख लिया है।

दुकान की स्थापना, फर्नीचर और माल खरीदने के लिए मुझे लगभग पाँच लाख रुपये की आवश्यकता है। मेरे पास स्वयं की पूँजी केवल एक लाख रुपये है। शेष राशि के लिए मैं आपके बैंक से ऋण लेना चाहता हूँ। योजना की रिपोर्ट, पहचान-पत्र और निवास प्रमाण-पत्र इस आवेदन के साथ संलग्न हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे चार लाख रुपये का ऋण स्वीकृत करने की कृपा करें। मैं बैंक के नियमों के अनुसार किस्तों में ऋण की राशि ब्याज सहित समय पर चुका दूँगा। इस सहायता के लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

भवदीय,
क ख ग
संलग्नक: योजना रिपोर्ट, पहचान-पत्र, निवास प्रमाण-पत्र

निष्कर्ष:
पत्र में ऋण की आवश्यकता, राशि, उपयोग और चुकाने का वादा स्पष्ट लिखा गया है, जो ऐसे आवेदन के लिए आवश्यक है।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
अन्तरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम का आरम्भ
3. प्रमुख उपलब्धियाँ
4. अन्तरिक्ष अनुसन्धान के लाभ
5. भावी योजनाएँ
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, अन्तरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम:
प्रस्तावना
मनुष्य सदा से आकाश के रहस्यों को जानने का इच्छुक रहा है। बीसवीं सदी में यह जिज्ञासा अन्तरिक्ष अनुसन्धान के रूप में सामने आई। भारत ने भी इस क्षेत्र में सीमित साधनों के बावजूद ऐसी प्रगति की है कि आज उसकी गणना दुनिया के अग्रणी अन्तरिक्ष देशों में होती है। यह सफलता वैज्ञानिकों के परिश्रम और दूरदर्शी नेतृत्व का परिणाम है।

कार्यक्रम का आरम्भ

भारत के अन्तरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई माने जाते हैं। उनके प्रयासों से 1969 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन, इसरो, की स्थापना हुई। उद्देश्य था कि अन्तरिक्ष विज्ञान का उपयोग देश के विकास और आम आदमी की भलाई में किया जाए। 1975 में भारत ने अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट अन्तरिक्ष में भेजा।

प्रमुख उपलब्धियाँ

इसरो ने पी.एस.एल.वी. और जी.एस.एल.वी. जैसे प्रक्षेपण यान विकसित किए। 2008 में चन्द्रयान-1 ने चन्द्रमा पर जल के अणुओं की उपस्थिति के संकेत दिए। 2014 में मंगलयान अपने पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचा और भारत ऐसा करने वाला पहला एशियाई देश बना। 2017 में एक ही प्रक्षेपण में 104 उपग्रह छोड़कर विश्व-कीर्तिमान बनाया गया। अगस्त 2023 में चन्द्रयान-3 का लैंडर चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरा। ऐसा करने वाला भारत पहला देश बना। इसके बाद सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य-एल1 मिशन भेजा गया।

अन्तरिक्ष अनुसन्धान के लाभ

उपग्रहों से दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण और इण्टरनेट सेवाएँ मिलती हैं। मौसम की भविष्यवाणी और चक्रवात की चेतावनी से करोड़ों लोगों की जान बचती है। दूर-संवेदी उपग्रह खेती, जल-संसाधन, वन और आपदा-प्रबन्धन में सहायता करते हैं। नाविक जैसी दिशा-निर्देशन प्रणाली सुरक्षा और यातायात के काम आती है।

भावी योजनाएँ

गगनयान योजना के अन्तर्गत भारतीय अन्तरिक्ष-यात्रियों को अपने यान से अन्तरिक्ष में भेजने की तैयारी है। भविष्य में अपना अन्तरिक्ष स्टेशन बनाने और अन्य ग्रहों के अध्ययन का भी लक्ष्य है। निजी कम्पनियों की भागीदारी से इस क्षेत्र में नए अवसर खुल रहे हैं।

उपसंहार

अन्तरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम देश के आत्मविश्वास और वैज्ञानिक क्षमता का प्रतीक हैं। ये उपलब्धियाँ नई पीढ़ी को विज्ञान की ओर प्रेरित करती हैं। यदि यही

निरन्तरता बनी रही, तो भारत आने वाले वर्षों में अन्तरिक्ष के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करने में समर्थ होगा।

निष्कर्ष:
इस निबन्ध में इसरो की स्थापना से लेकर चन्द्रयान-3 तक की यात्रा, उपयोग और भावी लक्ष्य क्रम से दिए गए हैं।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **महिला सशक्तीकरण की उपयोगिता**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. महिला सशक्तीकरण का अर्थ
3. सशक्तीकरण की आवश्यकता
4. सरकारी प्रयास और संवैधानिक व्यवस्था
5. उपयोगिता और लाभ
6. बाधाएँ और समाधान
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, महिला सशक्तीकरण की उपयोगिता:
प्रस्तावना
किसी भी समाज की उन्नति उसकी आधी आबादी की उन्नति के बिना सम्भव नहीं है। हमारे यहाँ नारी को शक्ति का रूप माना गया है, फिर भी लम्बे समय तक उसे शिक्षा, सम्पत्ति और निर्णय के अधिकारों से दूर रखा गया। आज यह समझा जाने लगा है कि महिलाओं को सशक्त बनाना केवल उन पर उपकार नहीं, बल्कि समाज और देश की आवश्यकता है।

महिला सशक्तीकरण का अर्थ

महिला सशक्तीकरण का अर्थ है महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और निर्णय लेने की क्षमता में इतना समर्थ बनाना कि वे अपने जीवन के फैसले स्वयं ले सकें। इसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तीनों प्रकार की स्वतन्त्रता शामिल है।

सशक्तीकरण की आवश्यकता

अतीत में बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, पर्दा-प्रथा और कन्या-भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों ने महिलाओं को पीछे धकेला। शिक्षा के अभाव में वे आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर रहीं। इन्हें दूर करने के लिए उन्हें बराबरी के अवसर देना आवश्यक है।

सरकारी प्रयास और संवैधानिक व्यवस्था

भारतीय संविधान समानता का अधिकार देता है और लिंग के आधार पर भेदभाव को रोकता है। पंचायतों और नगर-निकायों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई स्थान आरक्षित किए गए हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान चलाए गए हैं। महिलाओं के लिए स्वयं-सहायता समूह और अनेक आर्थिक योजनाएँ शुरू हुई हैं। संसद और विधानसभाओं में महिला आरक्षण के लिए 2023 में कानून भी पारित हुआ।

उपयोगिता और लाभ

शिक्षित महिला पूरे परिवार को शिक्षित करती है। वह बच्चों के पालन-पोषण और स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देती है, जिससे अगली पीढ़ी सुदृढ़ बनती है। कामकाजी महिलाएँ परिवार की आय बढ़ाती हैं और देश की अर्थव्यवस्था को गति देती हैं। राजनीति में उनकी भागीदारी से शासन में संवेदनशीलता आती है। सेना, विज्ञान, खेल और प्रशासन में महिलाओं की सफलता यह प्रमाणित करती है कि अवसर मिलने पर वे किसी से पीछे नहीं हैं।

बाधाएँ और समाधान

आज भी कई स्थानों पर रूढ़िवादी सोच, असुरक्षा और लैंगिक भेदभाव बना हुआ है। इसके समाधान के लिए बालिका-शिक्षा पर जोर, कठोर कानूनों का पालन और समाज की सोच में बदलाव आवश्यक है। पुरुषों को भी बराबरी के इस अभियान में साथी बनना होगा।

उपसंहार
महिला सशक्तीकरण से परिवार, समाज और राष्ट्र तीनों मजबूत होते हैं। जब महिलाएँ आत्मनिर्भर और निर्भय होंगी, तभी सच्चे अर्थ में विकसित भारत का सपना पूरा होगा।

निष्कर्ष:
निबन्ध में अर्थ, आवश्यकता, प्रयास, उपयोगिता और बाधाओं को क्रम से रखकर विषय का पूरा विवेचन किया गया है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
बेरोजगारी की समस्या और समाधान

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. बेरोजगारी का अर्थ
3. बेरोजगारी के कारण
4. बेरोजगारी के दुष्परिणाम
5. समस्या का समाधान
6. सरकारी प्रयास
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:
प्रस्तावना
भारत आज संसार का सबसे युवा देश है, परन्तु यहाँ के करोड़ों युवा काम की तलाश में भटक रहे हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उन्हें योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता। बेरोजगारी की यह समस्या देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा बन गई है।
बेरोजगारी का अर्थ

जब कोई व्यक्ति काम करने के योग्य और इच्छुक होता है, फिर भी उसे काम नहीं मिलता, तो उसे बेरोजगार कहते हैं। कुछ लोगों के पास काम तो होता है, पर वह उनकी योग्यता से बहुत कम स्तर का होता है। इसे अर्द्ध-बेरोजगारी कहा जाता है।

बेरोजगारी के कारण

इसका सबसे बड़ा कारण तेजी से बढ़ती जनसंख्या है। नौकरियाँ कम हैं और आवेदन करने वाले बहुत अधिक। हमारी शिक्षा-प्रणाली भी किताबी ज्ञान पर अधिक जोर देती है और व्यावहारिक कौशल कम सिखाती है। लोग खेती छोड़कर शहरों की ओर भाग रहे हैं। बड़ी मशीनों के आने से कुटीर और लघु उद्योग कमजोर हुए हैं। सरकारी नौकरी के मोह के कारण भी युवा निजी काम या स्वरोजगार से बचते हैं।

बेरोजगारी के दुष्परिणाम

बेरोजगार युवक निराशा और तनाव में घिर जाता है। गरीबी बढ़ती है और परिवार का पालन-पोषण कठिन हो जाता है। कई बार युवक चोरी, नशे और अपराध की राह पकड़ लेते हैं। देश की प्रतिभा विदेश चली जाती है और समाज में असन्तोष फैलता है।

समस्या का समाधान

जनसंख्या पर नियन्त्रण करना सबसे पहला कदम है। शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाए और तकनीकी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर बल दिया जाए। कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन मिले। गाँवों में ही रोजगार के साधन बढ़ाए जाएँ, ताकि शहरों की ओर पलायन रुके। युवाओं को अपना काम शुरू करने की सोच अपनानी चाहिए।

सरकारी प्रयास

सरकार ने मनरेगा, कौशल भारत, स्टार्टअप इण्डिया, मुद्रा योजना और मेक इन इण्डिया जैसी योजनाएँ चलाई हैं। इनसे लाखों लोगों को काम और प्रशिक्षण मिला है, फिर भी अभी बहुत कुछ करना शेष है।

उपसंहार

बेरोजगारी दूर होने पर ही देश की युवा-शक्ति राष्ट्र-निर्माण में लग सकेगी। सरकार, समाज और युवा तीनों को मिलकर प्रयास करना होगा। तभी भारत समृद्ध और आत्मनिर्भर बनेगा।

निष्कर्ष:

कौशल, स्वरोजगार और सही नीतियों के सहारे बेरोजगारी की समस्या को कम किया जा सकता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **मेरा प्रिय खेल**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. क्रिकेट का परिचय और नियम
3. क्रिकेट के तीन रूप
4. भारत में क्रिकेट की लोकप्रियता
5. क्रिकेट से होने वाले लाभ
6. मेरा अनुभव और सावधानियाँ
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: मेरा प्रिय खेल (क्रिकेट):

प्रस्तावना

खेल जीवन को स्वस्थ, सक्रिय और आनन्दमय बनाते हैं। संसार में हॉकी, फुटबॉल, कबड्डी और बैडमिंटन जैसे अनेक खेल खेले जाते हैं, पर मुझे सबसे अधिक क्रिकेट पसन्द है। जब भी छुट्टी मिलती है, मैं अपने मित्रों के साथ मैदान में पहुँच जाता हूँ।

क्रिकेट का परिचय और नियम

क्रिकेट का जन्म इंग्लैण्ड में हुआ, पर आज यह भारत सहित अनेक देशों में खेला जाता है। इसमें ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ियों की दो टीमें होती हैं। मैदान के बीच बाईस गज की पिच होती है, जिसके दोनों सिरों पर तीन-तीन विकेट लगे रहते हैं। एक टीम बल्लेबाजी करती है और दूसरी गेंदबाजी तथा क्षेत्ररक्षण। बल्लेबाज जितने रन बनाता है, टीम को उतने अंक मिलते हैं। अधिक रन बनाने वाली टीम विजयी होती है।

क्रिकेट के तीन रूप

यह खेल टेस्ट मैच, एकदिवसीय मैच और बीस-बीस ओवर के मैच, इन तीन रूपों में खेला जाता है। टेस्ट मैच धैर्य की परीक्षा लेता है, जबकि टी-20 में तेज गति और रोमांच मिलता है।

भारत में क्रिकेट

भारत में क्रिकेट केवल खेल नहीं, एक उत्सव है। सन् 1983 में कपिल देव की कप्तानी में भारत ने पहली बार विश्वकप जीता। इसके बाद 2007 में टी-20 विश्वकप और 2011 में एकदिवसीय विश्वकप भी भारत के नाम रहा। सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ियों ने विश्व में देश का नाम ऊँचा किया।

क्रिकेट के लाभ

क्रिकेट खेलने से दौड़ने, गेंद फेंकने और कैच पकड़ने का अच्छा व्यायाम होता है। शरीर मजबूत बनता है और फुर्ती आती है। मन में एकाग्रता, धैर्य और सही निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। टीम में खेलने से सहयोग, अनुशासन और नेतृत्व के गुण आते हैं। खिलाड़ी हार और जीत को समान भाव से स्वीकार करना सीखता है।

मेरा अनुभव और सावधानियाँ

मैं अपने विद्यालय की टीम में बल्लेबाज हूँ। रोज शाम के अभ्यास से मैंने समय का सही उपयोग करना सीखा है। फिर भी खेल को पढ़ाई से ऊपर नहीं रखना चाहिए। चोट से बचने के लिए हेलमेट और पैड जैसे सुरक्षा साधन पहनने चाहिए।

उपसंहार

क्रिकेट मनोरंजन के साथ स्वास्थ्य और चरित्र-निर्माण का भी श्रेष्ठ साधन है। इसीलिए यह मेरा प्रिय खेल है। मैं चाहता हूँ कि हर विद्यार्थी किसी न किसी खेल को अवश्य अपनाए।

निष्कर्ष:

इस विषय पर निबन्ध में प्रस्तावना, खेल का परिचय, लाभ, अपना अनुभव और

उपसंहार का क्रम रखना चाहिए। परीक्षार्थी अपनी पसन्द का कोई भी खेल, जैसे हॉकी या कबड्डी, इसी ढाँचे में लिख सकता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **नयी शिक्षानीति की विशेषताएँ**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. नयी शिक्षा नीति की पृष्ठभूमि
3. स्कूली शिक्षा की नयी संरचना
4. भाषा और मातृभाषा पर बल
5. व्यावसायिक और कौशल शिक्षा
6. उच्च शिक्षा में सुधार
7. शिक्षकों और मूल्यांकन में परिवर्तन
8. चुनौतियाँ और उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: नयी शिक्षानीति की विशेषताएँ:

प्रस्तावना

शिक्षा किसी राष्ट्र के विकास की आधारशिला है। समय के साथ समाज की आवश्यकताएँ बदलती हैं, इसलिए शिक्षा-व्यवस्था में भी परिवर्तन जरूरी होता है। इसी उद्देश्य से भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की।

पृष्ठभूमि

इससे पहले देश में 1986 की शिक्षा नीति चल रही थी, जिसमें 1992 में कुछ संशोधन हुए थे। लगभग चौंतीस वर्ष बाद डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति के प्रारूप पर आधारित नयी नीति को 29 जुलाई 2020 को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने स्वीकृति दी। इसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय

करने की बात भी कही गयी।

स्कूली शिक्षा की नयी संरचना

पुरानी 10+2 व्यवस्था के स्थान पर अब 5+3+3+4 की संरचना रखी गयी है। इसमें प्रारम्भिक अवस्था, प्राथमिक, मध्य और माध्यमिक चरण आते हैं। तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु के बच्चों की आधारभूत शिक्षा खेल और गतिविधियों पर आधारित होगी।

भाषा पर बल

नीति में कम से कम कक्षा 5 तक, और यथासम्भव कक्षा 8 तक, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा रखने का सुझाव है। त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया है, पर किसी भाषा को थोपा नहीं जाएगा। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

व्यावसायिक और कौशल शिक्षा

कक्षा 6 से ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप का अवसर देने की बात है। कला, विज्ञान और वाणिज्य के बीच कठोर विभाजन हटाया गया है, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के विषय चुन सकते हैं।

उच्च शिक्षा में सुधार

स्नातक पाठ्यक्रम चार वर्ष का हो सकता है, जिसमें बीच में पढ़ाई छोड़ने और फिर लौटने की सुविधा है। अकादमिक क्रेडिट बैंक में विद्यार्थी के अंक जमा रहेंगे। सन् 2035 तक उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 50 प्रतिशत तक पहुँचाने का लक्ष्य है। शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत करने की बात भी नीति में है।

शिक्षक और मूल्यांकन

शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया है। रटने के स्थान पर समझ और कौशल पर आधारित मूल्यांकन को महत्त्व मिलेगा। विद्यार्थी का समग्र प्रगति-पत्र बनेगा।

चुनौतियाँ और उपसंहार

नीति अच्छी है, पर उसकी सफलता योग्य शिक्षकों, पर्याप्त धन और ईमानदार क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी। यदि इसे सही ढंग से लागू किया गया, तो यह भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाने में सहायक होगी।

निष्कर्ष:

नयी शिक्षा नीति रटन्त शिक्षा से हटकर रुचि, कौशल और मातृभाषा पर आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने का प्रयास है।